महानदी

"नराकास" भिलाई - दुर्ग की गृह पत्रिका

2023

मेरी माटी मेरा देश

विशेषांक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

57 वीं छमाही बैठक
एवं
वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह
22 अगस्त 2023
स्थान - मानव संसाधन विकास विभाग, भूतल सभागार

संरक्षक
श्री अनिर्बान दासगुप्ता
निदेशक प्रभारी
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

मार्गदर्शक
श्री पवन कुमार
कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र

संपादक मंडल
श्री पंकज त्यागी
महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन/विधि)
फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

श्री सौरभ कुमार राजा
महाप्रबंधक सेल–सेट, भिलाई

श्रीमती अनुराधा धनांक
उप मंडल अभियंता
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

श्री पंच राम साहू
वरीय सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग

श्रीमती भावना चाँदवानी
वरिष्ठ मंडल प्रबंधक
यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., भिलाई

श्री जितेंद्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन–राजभाषा)
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र

मुख्यपृष्ठ अभिकल्पन
स्पर्श ग्राफिक्स
मो. 9302833424

संपादन सहयोग
नराकास सचिवालय के कार्मिक

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका – वर्ष 2023
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग (छ. ग.)

'मेरी माटी मेरा देश' विशेषांक, अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	नाम	पृष्ठ नं
1.	भाषा हमारी संस्कृति की वाहक	आनंद कुमार चौधरी	07
2.	भगवान	अभय अग्रवाल	08
3.	बुज़ुर्ग–एक धरोहर	डॉ. मृदुला चतुर्वेदी	09
4.	लो फिर दशहरा आ गया	कौशल किशोर शर्मा	10
5.	एक नई शुरुआत करें	जितेन्द्र दास मानिकपुरी	11
6.	मुस्कुराता रहे जीवन	अनुराधा धनांक	12
7.	मृत्यु	आकाश शर्मा 'दीवाना'	13
8.	वीर, ऐ राहगीर, बारिश की बूँद	ओ. पी. गोंदुले	13
9.	मेरी माटी, मेरा देश	सदाशिव मोकल	14
10.	मोह भंग	अलंकार समद्दार	15
11.	मेरी माटी, मेरा देश	विनय प्रकाश बारी	16
12.	सुरक्षा गीत	किशोर कुमार नशीने	16
13.	बेटियाँ, सफ़र ख़्वाहिशों का	नितिन गोस्वामी	17
14.	सबक ज़िन्दगी के	नितिन गोस्वामी	17
15.	एक आस, एक विश्वास, मैं	नितिन गोस्वामी	17
16.	मैं घूमता क्यों हूँ	डॉ. अजय आर्य	18
17.	मुझसे आकर तुम मिल लेना	नितिन गोस्वामी	21
18.	अपनी माटी अपना देश	ओमवीर करन	21
19.	भिलाई शहर में प्राकृतिक खेती	पी. आर. बेरा	22
20.	गांधी जी का चौथा बंदर	चैतन्य वेंकटेश्वर	23
21.	चाँदनी	रश्मि अमितेष पुरोहित	24
23.	औद्योगिक और तकनीकी विकास	पी. के. ठाकुर	29
24.	मोर गँवई गाँव, किसका कहाँ महत्व है	पी. आर. साहू	31
25.	यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी	राकेश श्रीवास्तव	32
26.	मेरी माटी, मेरा देश	किशोर कुमार नशीने	32
27.	जननी प्रकृति	रागिनी गुरव	33
28.	एक पेड़ लगा	रागिनी गुरव	35
29.	मेरी भाषा क्या है?	रागिनी गुरव	36
30.	हिंदुस्तान हमारा है	भागवत राम निषाद	36
31.	जुनून	अमितेष पुरोहित	37
32.	वित्त विभाग और मैं	अविलाष प्रसाद पंसारी	37
33.	सब कहते हैं	राजू कुमार शाह	38
34.	हिंदी के वैश्विक भाषा की ओर बढ़ते कदम	रीतेश राय	38
35.	सुखी जीवन की राह	विजय सिंह ठाकुर	40
36.	गाजा पट्टी : एक खुली जेल	सौरभ कुमार राजा	41
37.	तेरे नाम से है वजूद मेरा	शुभ्रा सिन्हा	42
38.	मेरी हिंदी को मान सम्मान दे दो	स्मिता जैन	43
38.	हम सबका अभिमान है हिंदी	यशवंत कुमार साहू	43
39.	कविता की अपार संभावनाएँ	पुरुषोत्तम साहू	44
40.	प्राचीन भारतीय स्वास्थ्य सूत्र	नगीना यादव	45
41.	शब्द, सिया राम, आवारा मन	डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'	47
42.	लोगो स्पर्धा में पुरस्कार	धनंजय कुमार मेश्राम	48

टिप्पणी
पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र: राजभाषा विभाग–313–ए, तीसरा तल, इस्पात भवन
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.)–490001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष
HARISH SINGH CHAUHAN
Asstt. Director (Impln.) & HOD

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
कमरा नं. 206, निर्माण सदन
52 ए, अरेरा हिल्स
भोपाल (म.प्र.), 462011
दूरभाष एवं फैक्स 0755 2553149

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई – दुर्ग अपनी गृह पत्रिका 'महानदी' का आगामी अंक मेरी माटी– मेरा देश विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है। गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा हिंदी का प्रयोग सतत् रूप से बढ़ता रहे, इस हेतु निरन्तर प्रयास अपेक्षित है। पत्रिका का नियमित प्रकाशन और आपके प्रतिष्ठान द्वारा निरन्तर नवोन्मेषी गतिविधियों/कार्यक्रमों का आयोजन, आपके प्रतिष्ठान के कार्मिकों की राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

किसी भी देश की समृद्ध संस्कृति का आधार, उसकी अपनी मज़बूत भाषा पर टिका होता है। हिंदी देश की राजभाषा है, करोड़ों लोग इसे देश तथा विदेशों में बोलते एवं समझते हैं। यह धीरे– धीरे अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर रही है। सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि पर इसका प्रयोग तेज़ी से बढ़ रहा है। इसका विकास करना, इसे प्रशासनिक कार्यों में अधिक से अधिक प्रसारित करना हमारा संवैधानिक दायित्व और गौरव की बात है।

हिंदी में प्रकाशित रचनाएँ समस्त सदस्यों की रुचि, रचनात्मकता, विचार एवं भाषा कौशल की परिचायक हैं एवं साथ ही, राजभाषा में लेखन को जीवन्तता प्रदान करती हैं। मैं इस पत्रिका की सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूँ कि वे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पूर्व की भाँति ही सहयोग प्रदान करते हुए राजभाषा का अनवरत् प्रवाह बनाए रखें। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

हरीश सिंह चौहान

अनिर्बान दासगुप्ता
निदेशक प्रभारी
ANIRBAN DASGUPTA
Director In-charge

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत विगत 75 वर्षों में हमारे देश भारत ने प्रगति के अनेक नव्य कीर्तिमान रचे हैं। आज का भारत एक समृद्ध एवं आत्मनिर्भर भारत है, हमने प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की है। यह सब प्रत्येक भारतीय द्वारा अपने राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वहन से ही संभव हुआ है। हिंदी में कार्यालयीन कामकाज हमारा राष्ट्रीय दायित्व है। हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में **'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग'** सतत् प्रयासरत् है। इसी क्रम में पत्रिका 'महानदी' का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका के लिए लेखन से हिंदी के प्रति अनुराग में वृद्धि तो होती ही है, साथ ही **'मेरी माटी, मेरा देश'** जैसे विषय पर केन्द्रित रचनाओं से राष्ट्रीयता और देशप्रेम की भावना का भी विकास होता है।

पूर्ण विश्वास है कि, प्रकाशित रचनाएँ पाठकों के हृदय में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने में अवश्य ही सफल होंगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

अनिर्बान दासगुप्ता

पवन कुमार
कार्यपालक निदेशक
(कार्मिक एवं प्रशासन)
PAWAN KUMAR
Executive Director (P&A)

स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

हिंदी हमारे देश की प्रमुख भाषा है। विविधताओं से परिपूर्ण भारत में हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो अधिकतम भारतीयों को जोड़ती है। हिंदी के माध्यम से ही संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। हिंदी का प्रचार-प्रसार भारत की उन्नति में सहायक है। समस्त कार्य-व्यवहार और कार्यालयीन कामकाज हिंदी में किया जाना, देश की प्रगति एवं एकता में लाभकारी है। अतः हमारा सतत् प्रयास होना चाहिए कि हम हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग द्वारा पत्रिका **'महानदी'** का **'मेरी माटी, मेरा देश'** विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। देश की माटी से जुड़ी रचनाओं से पाठकों को राष्ट्र के विषय में नए सिरे से जानने - समझने का अवसर प्राप्त होगा, जिससे राष्ट्रीयता की भावना सुदृढ़ होगी।

पत्रिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

पवन

पवन कुमार

सौमिक डे
उप महाप्रबंधक
(संपर्क व प्रशासन एवं प्रभारी राजभाषा)
SOUMIK DEY
DGM (L&A and I/c Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में वर्णित है कि, संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी। तदनुसार भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न माध्यमों से सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग' हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। इसी क्रम में पत्रिका **'महानदी'** का प्रकाशन किया जाता है, जो कि समसामयिक विषयों पर केन्द्रित होता है। प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से रचनाकारों एवं पाठकों के हृदय में हिंदी एवं अन्य राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति बोध जागृत करना ही हमारा प्रमुख उद्देश्य होता है।

'मेरी माटी, मेरा देश' अभियान पर केन्द्रित रचनाओं के द्वारा न केवल हमें अपनी माटी से जुड़ने का सुयोग मिला है, वरन् देश पर मर-मिटने वाले अनगिनत बलिदानियों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का पावन स्मरण करने का भी अवसर प्राप्त हुआ है।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि, पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्यों में अवश्य ही सफल होगी।

सौमिक

सौमिक डे

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन–राजभाषा)
JITENDRA DAS MANIKPURI
Dy. Manager (L&A - Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

पत्रिका महानदी का 'मेरी माटी, मेरा देश' विशेषांक प्रस्तुत है। इस अंक में, भारत सरकार द्वारा आरंभ **'मेरी माटी, मेरा देश'** अभियान से संबंधित जानकारियों एवं रचनाओं का समावेश किया गया है, साथ ही **'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग'** के विभिन्न सदस्य संस्थानों के कार्मिकों द्वारा रचित विविध विषयों पर रचनाओं का भी प्रकाशन किया गया है। उद्देश्य यही है कि हिंदी लेखन, पठन एवं रचनात्मकता का विकास हो।

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में किया गया प्रत्येक प्रयास राष्ट्र के प्रति हमारे दायित्वों के निर्वहन का एक सोपान है। देश की माटी से जुड़ी रचनाओं का सृजन भी उन्हीं में से एक है। हिंदी के प्रति हम सबका समर्पण निरंतर बना रहे, इन्हीं आशाओं के साथ... मंगलकामनाएँ।

जितेन्द्र

जितेन्द्र दास मानिकपुरी

भाषा हमारी संस्कृति की वाहक

प्रस्तावना: भाषा हमारी संस्कृति की वाहक विषय पर सर्वप्रथम हमें यह जानना आवश्यक है कि भाषा क्या है? भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल की गई है, परंतु पूरे भारत में स्थान संस्कृति के अनुसार लगभग 700 भाषाएँ बोली जाती हैं, जो किसी न किसी संस्कृति की वाहक हैं|

भाषा संस्कृति की अभिव्यक्ति का अभिन्न अंग है। मूल्य, विश्वास और रीति-रिवाजों को संप्रेषित करने के साधन के रूप में, इसका एक महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य है और यह समूह की पहचान और एकजुटता की भावनाओं को बढ़ावा देता है। यह वह साधन है जिसके द्वारा संस्कृति और इसकी परंपराओं और साझा मूल्यों को संप्रेषित और संरक्षित किया जा सकता है।

संस्कृति और भाषा

संस्कृति किसी व्यक्ति की पहचान को परिभाषित करने वाली एक विशेषता है, जो इस बात में योगदान देती है कि वे खुद को और उन समूहों को कैसे देखते हैं? जिनसे वे अपनी पहचान बनाते हैं। संस्कृति को मोटे तौर पर मनुष्यों के एक समूह द्वारा निर्मित जीवन जीने के तरीकों के योग के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रसारित होती है। प्रत्येक समुदाय, सांस्कृतिक समूह या जातीय समूह के अपने मूल्य, विश्वास और जीवन जीने के तरीके होते हैं।

संस्कृति के अवलोकन योग्य पहलू जैसे भोजन, पहनावा, उत्सव, धर्म और भाषा किसी व्यक्ति की सांस्कृतिक विरासत का ही हिस्सा हैं। संस्कृति के साझा मूल्य, रीति-रिवाज और इतिहास एक व्यक्ति के सोचने, व्यवहार करने और दुनिया को देखने के तरीके को आकार देते हैं। एक साझा सांस्कृतिक विरासत समूह के सदस्यों को एक साथ बांधती है और सामुदायिक स्वीकृति के माध्यम से अपने पन की भावना पैदा करती है।

सांस्कृतिक और भाषाई विविधता आज अधिकांश देशों की विशेषता है क्योंकि ऐतिहासिक घटनाओं और मानव प्रवास के परिणामस्वरूप विभिन्न समूहों के लोग एक साथ रहते हैं। बहुभाषी समाजों के भीतर, सांस्कृतिक विरासत और पहचान के संरक्षण के लिए विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक समूहों की भाषाओं का रखरखाव महत्वपूर्ण है। **भाषा के ख़त्म होने का मतलब है संस्कृति और पहचान का ख़त्म होना।** पूरे इतिहास में कई समाजों में, अल्पसंख्यक समूहों की भाषाओं का दमन उन अल्पसंख्यक संस्कृतियों को दबाने के लिए एक जानबूझकर नीति के रूप में किया गया है। परिणामस्वरूप, उपनिवेशीकरण और प्रवासन की प्रक्रियाओं के कारण दुनिया की बड़ी संख्या में भाषाएँ लुप्त हो गई हैं।

भाषा अधिक से अधिक लोगों को जोड़ती है, संपर्क भाषा के तौर पर विकास करती है। विविधताओं से भरे हमारे देश में हिंदी भाषा हमें एकता व अखंडता के सूत्र में बांधती है। भाषा हमारी भारतीय संस्कृति की वाहक भी है। यह धरोहर व अस्मिता की पहचान कराती है।

इसलिए संस्कृति को बचाने का प्रयास भाषा को बचाने एवं सहेजने से प्रारंभ होता है। किसी भी संस्कृति की पहचान, बिना भाषा के संभव नहीं है।

आनंद कुमार चौधरी
अभियंता
पावर ग्रिड, कुम्हारी

भगवान

एक बार एक राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि भगवान कहाँ पर रहता है? भगवान क्या करता है? भगवान दिखाई क्यों नहीं देता? राजा ने मंत्री को सात दिन का समय दिया और कहा कि उत्तर नहीं देने पर उसे दंड दिया जाएगा।

मंत्री दिन-रात इस समस्या का समाधान ढूंढने में लग गया। किंतु उसे इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाए। घर पर भी बहुत परेशान रहने लगा। मंत्री की एक सात वर्ष की बेटी थी। वो बहुत चतुर थी। उसने अपने पिताजी को रात-दिन परेशान देखा, तो एक दिन उनसे पूछा कि क्या बात है? वो सातवाँ दिन था। मंत्री ने राजा के प्रश्नों को बताया और उनके उत्तर नहीं मालूम होने की बात कही। मंत्री की बेटी उन प्रश्नों को सुनकर हँस पड़ी और बोली कि आप चिंता न करें। कल मुझे राजदरबार ले चलिएगा, मैं आपके प्रश्नों के उत्तर दूंगी। दूसरे दिन मंत्री ने अपनी बेटी के साथ राजा के दरबार पहुँचकर राजा से प्रार्थना की, कि उनके प्रश्नों का उत्तर उसकी बेटी देगी।

राजा ने बेटी से पूछा कि, भगवान कहाँ पर रहता है। बेटी ने उत्तर दिया - भगवान सर्वत्र रहता है, जैसे वायु सर्वत्र रहती है, किंतु दिखाई नहीं देती, वैसे ही भगवान सर्वत्र रहता है।

दूसरा प्रश्न - भगवान क्या करता है। बेटी ने उत्तर दिया कि, आप प्रश्न पूछ रहे हैं और उत्तर मैं दे रही हूँ। आप सिंहासन पर बैठे है और मैं खड़ी हूँ। आप शिष्य हैं, मैं गुरु हूँ ये तो ठीक बात नहीं। राजा को शर्म आई और वो सिंहासन से उतर गया और बोला कि आप सिंहासन पर बैठ जाइए। मैं खड़ा हो जाता हूँ। मंत्री की बेटी सिंहासन पर जाकर बैठ गई। और राजा से पूछा आप दूसरा प्रश्न पूछिए। राजा ने पूछा भगवान क्या करता है। बेटी ने हँस कर कहा - यही करता है, राजा को रंक बनाता है और रंक को राजा।

फिर राजा ने तीसरा प्रश्न पूछा - भगवान दिखाई क्यों नहीं देता? क्या प्रमाण है कि भगवान है। बेटी ने कहा कि, राजन थोड़ा दूध मंगवा दीजिए। राजा ने दूध मंगवाया और बेटी को दिया। बेटी ने दूध की कटोरी में चम्मच डाल कर हिलाया और पूछा कि इसमें दही कहाँ पर है। मुझे इसमें दही तो नहीं दिख रहा है।

राजा ने हँस कर उत्तर कहा कि, दूध में दही नहीं दिखाई देगा। दूध को जमाना पड़ता है। और तब उसका दही बनता है। बेटी ने उत्तर दिया कि, भगवान भी इसीलिए दिखाई नहीं देता। उसके लिए स्वयं को मथना पड़ता है। तब भगवान दिखाई देता है।

राजा इन सब उत्तरों से बड़ा प्रसन्न हुआ और मंत्री की बेटी की प्रशंसा करते हुए उसे बहुत सारी भेंट और पुरस्कारों के साथ विदा किया।

ये तो कहानी हुई। भगवान शब्द पाँच अक्षरों के मेल से बनता है। भ + ग + व + आ + न। इन पांच अक्षरों का अर्थ है - भ - भूमि (जमीन), ग - गगन (आकाश), व - वायु (हवा), आ - अग्नि (आग), न - नीर (जल)।

यह पाँचों तत्व सर्वत्र दिखाई देते हैं। इन्हीं पाँच तत्वों के योग से भगवान बनते हैं, जिन्होंने प्रत्येक जीव को जीवन प्रदान किया है। भगवान कहीं छिपे नहीं हैं। वे सर्वत्र व्याप्त हैं।

सनातन धर्म में पाँच की संख्या का बहुत महत्त्व है, जैसे - पंच तत्व, पंच परमेश्वर, पंच धातु इत्यादि। हमें अपने सनातन धर्म का अध्ययन करना चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए।

अभय अग्रवाल
महाप्रबंधक
सेल सेट, भिलाई उप केन्द्र

बुज़ुर्ग - एक धरोहर

घर की रौनक हैं बुज़ुर्ग, हमारे समाज की धरोहर हैं बुज़ुर्ग,
हमारा स्वाभिमान हैं बुज़ुर्ग, उनका मान करें सम्मान करें।

मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः - इस पंक्ति को बोलते हुए हमारा शीश श्रद्धा से झुक जाता है और सीना गर्व से तन जाता है। यह पंक्ति सच भी है, जिस प्रकार ईश्वर अदृश्य रहकर हमारे माता-पिता की भूमिका निभाते हैं, उसी प्रकार माता-पिता हमारे दृश्य, साक्षात ईश्वर हैं। इसीलिए तो भगवान गणेश ने ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करने की बजाय अपने माता पिता शिव-पार्वती की परिक्रमा करके प्रथम पूज्य होने का अधिकार प्राप्त कर लिया था।

बड़े बुज़ुर्गों का महत्व, एक महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर हमें गौर करना चाहिए। वृद्धावस्था मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है और बड़े बुज़ुर्गों का सम्मान करना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। बड़े बुज़ुर्गों का अनुभव उनके जीवन की गहराई को दर्शाता है। वे हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते हैं और हमें उनसे बहुमूल्य शिक्षा प्राप्त होती है। उनका अनुभव हमें सभ्यता, नैतिकता, और धैर्य की सीख देता है। वे अपने जीवन के अनुभवों से हमें यह सिखाते हैं कि, कैसे हम अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं का मुकाबला कर सकते हैं और स्वयं को समर्पित कर सकते हैं।

किन्तु आज के इस भौतिकवाद से परिपूर्ण कलयुग में बढ़ते एकल परिवार के चलन तथा आने वाली पीढ़ी की सोच में परिवर्तन के चलते ऐसा देखने को नहीं मिल रहा है। कुछ परिवारों में बुज़ुर्गों को न तो देवता समझा जाता है और न ही मनुष्यों जैसा व्यवहार किया जाता है। ऐसे परिवारों में बुज़ुर्ग उपेक्षित, बेसहारा और एकांतवास में रहकर ईश्वर से अपने बुलावे की प्रतीक्षा मात्र करते रहते हैं। कुछ सुसंस्कृत परिवारों को छोड़ दें, तो आज अधिकांश परिवारों में बुज़ुर्गों को भगवान तो क्या, मनुष्य का दर्जा भी नहीं दिया जा रहा है। किसी ज़माने में जिनकी आज्ञा के बगैर घर का कोई कार्य और निर्णय नहीं होता था। जो परिवार में सर्वोपरि थे और परिवार की शान समझे जाते थे, वे आज उपेक्षित, बेसहारा और दयनीय जीवन जीने को विवश दिखाई पड़ते हैं। यहाँ तक कि तथाकथित पढ़े-लिखे लोग जो अपने आप को आधुनिक मानते हैं, अपने आपको परिवार की सीमाओं में बंधा हुआ स्वीकार नहीं करते हैं और सीमाएँ तोड़ने के कारण पशुवत व्यवहार करना सीख गए हैं। वे अपने माता-पिता व अन्य बुज़ुर्गों को "रूढ़िवादी", "सनके हुए" तथा "पागल हो गए हैं ये तो" तक का उलाहना देने लगे है। आप सोच रहे होंगे कि हम तो ऐसा नहीं करते। लेकिन मैं आपको बताना चाहूंगी कि, अनजाने में आपसे ऐसा हो जाता है जिससे माँ-बाप का दिल दुख जाता है।

बुज़ुर्ग व्यक्ति अपने बच्चों से आमतौर पर कुछ आशाएँ रखते हैं, जो उनके जीवन के अंतिम चरण में महत्वपूर्ण हो सकती हैं। ये आशाएँ अलग-अलग व्यक्ति की व्यक्तिगत परिपूर्णता और परिपेक्ष्यता के आधार पर बदल सकती हैं, लेकिन आमतौर पर निम्नलिखित होती हैं : -

1. **सम्मान और सहृदयता:** बुजुर्ग व्यक्ति अपने बच्चों से सम्मान पूर्ण और सहृदय व्यवहार की उम्मीद करते हैं वे चाहते हैं कि उनके साथ बच्चे वाद-विवाद न करें वरन् स्नेहपूर्ण व्यवहार करें।
2. **समय और ध्यान:** बुज़ुर्ग व्यक्ति के लिए अकेलापन कठिन हो सकता है और वे चाहते हैं कि, उनके बच्चे उनके साथ समय बिताएँ उनका ध्यान रखें और आत्मीयता दिखाएँ।
3. **आर्थिक सुरक्षा:** बुज़ुर्ग व्यक्ति चाहते हैं कि, उनके बच्चे उनकी आर्थिक चिंताओं को कम करें उन्हें भरोसा दिलाएँ कि, वे उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।
4. **आध्यात्मिक उन्नति:** बुज़ुर्ग व्यक्ति अक्सर आध्यात्मिक विकास को महत्वपूर्ण मानते हैं और वे चाहते हैं कि उनके बच्चे भी इस मार्ग पर चलें, तो उन्हें विश्वास दिलाकर उनका मनोबल बढ़ाएँ।

"बुजुर्गों का आदर करना हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है
और यह हमारी ज़िन्दगी में विशेष महत्व रखता है" **- महात्मा गांधी**

बच्चों को सिखाएँ

- घर में बच्चों को जरूरी संस्कार दें और उन्हें बड़ों का आदर-सम्मान करना सिखाएँ।
- प्रतिदिन सुबह उठकर बच्चों को माता-पिता और घर के बड़े-बुजुर्गों को प्रणाम करना सिखाएँ।
- जब भी बच्चा परीक्षा या साक्षात्कार के लिए जाए, तो उसे बड़े-बुजुर्गों के पैर छूकर जाने को कहें।
- बच्चों को सिखाएँ कि वे रोज़ाना माता-पिता और घर के बड़े-बुजुर्गों के पास कुछ समय बैठकर अपने सुख-दुख बताएँ और उनसे उनका हाल भी पूछें ।
- जितना हो सके, अपने बच्चों को उनके दादा-दादी और नाना-नानी के सम्पर्क में रखें क्योंकि बुजुर्गों से उन्हें बड़ों की सेवा, विनय, आज्ञा पालन और संस्कार की सीख मिलती है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वृद्धजनों के अधिकारों को सुनिश्चित करने और उनके सम्मान को बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस की घोषणा की। इसके बाद से हर साल 1 अक्टूबर को यह दिवस मनाया जाता है। यह दिन बुज़ुर्गों के सम्मान में मनाया जाता है। बुजुर्ग हमारे समाज का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं। बुजुर्ग परिवार की शान और छायादार पेड़ के समान होते हैं, इसलिए अपने घर के बच्चों को बुजुर्गों का महत्व समझाएँ और बुजुर्गों की सेवा करने का संस्कार सिखाएँ क्योंकि बुजुर्गों के प्यार, संस्कार, स्पर्श और आशीर्वाद से वंचित रहकर कभी किसी का जीवन नहीं सँवर सकता। बुजुर्ग हमारे समाज की आत्मा होते हैं और उनके साथ का रिश्ता हमारी संस्कृति और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है।

"जीवन में हर कठिन कार्य सफल हो जाता है, जब बुजुर्गों का आशीर्वाद साथ रहता है।"

डॉ. मृदुला चतुर्वेदी
पी. जी. टी. (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

★ ★ ★

लो फिर दशहरा आ गया

लो फिर दशहरा आ गया
ढूंढ लो रावण अपने भीतर का
देखो दस शीश ही हैं
या बढ़कर हो गए बीस- तीस
जैसा भी है, बाहर निकालो, चौक पर लाओ
सबको बताओ, सबको दिखाओ
कितने दुःख दिए इसने, कितनी हानि है पहुँचाई
अपनों से दूर किया और अनगिनत हार दिलाई
कोशिश की अनेकों बार...
सर काटे उसके बारम्बार....
पर कुछ नहीं बिगड़ा उसका...
अट्टहास करता उठ खड़ा हुआ वो हर बार
प्रण लो सबके सामने - उसे आज समूल नष्ट करने का
समय आ गया स्वयं के रावण से स्वयं को मुक्त करने का
सबको दिखाकर पूरी हिम्मत जुटाकर
मार दो उसे जीवन उत्कर्ष के लिए
चिंता मत करो कोई नया रावण मिल ही जाएगा
अपने भीतर आगामी वर्ष के लिए।

कौशल किशोर शर्मा
उप महाप्रबंधक (क्रय)
भिलाई इस्पात संयंत्र

एक नई शुरुआत करें।

जो बीत चुका उसको भूलें, आओ भूलें उस विगत काल को।
पाना है क्या, जाना है कहाँ, उस ओर बढ़ें, तय लक्ष्य करें।
नव आशाओं की बात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

पल-पल परिवर्तन होता है, इस जग की है यह रीत सदा।
हैं आज अगर गहरे साए, आएगा कल फिर उजियारा।
आओ फिर नया प्रभात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

उत्तुंग शिखर तक जाना हो, अपनी पहचान बनाना हो।
है मार्ग यही, बस एक सही, जीवन में यदि कुछ पाना हो।
नव पथ का हम सूत्रपात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

निश्चल बैठे ना कोई कभी, प्रतिपल चलते ही रहना है।
रुकना जीवन का नाम नहीं, नित नवल स्वप्न ही गढ़ना है।
श्रम का जीवन में साथ धरें, अब एक नई शुरुआत करें।।

हो लक्ष्य भले कितना ही विकट, आएँ पथ में भीषण संकट।
मानें न हार, करके विचार, पुरुषार्थ सदा सर्वोत्तम कर।
पूरे मन से आघात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

केवल अपनी ही ना सोचें, ये जग सारा ही अपना है।
संपूर्ण विश्व लाभान्वित हो, मानवता का ये सपना है।
लेकर सबको ही साथ चलें, अब एक नई शुरुआत करें।।

कर ले मानव यदि दृढ़ निश्चय, टिक सका नहीं संकट समक्ष।
है शूर वही जो हारे ना, साहस से कर दे विजय प्रत्यक्ष।
ललकार करें, प्रतिघात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

दुंदुभि बजे, रणभेरी हो, जयकारे हों और गर्जन हो।
हों शत्रुदल कितने ही विकट, प्रत्युत्तर में भीषण रण हो।
सब मिल प्रचण्ड संघात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

मानव की क्षमताओं का तो, अनुमान कोई भी लगा न सका।
साहस की सीमाएँ अनंत, कोई थाह कभी भी पा न सका।
नैराश्य की ना कोई बात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

हैं वीर मातृभूमि के हम, भारत महान के वासी हम।
राणा, शिवा, लक्ष्मी बाई के आदर्शों के अनुगामी हम।
हर रिपु दल को हम मात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

निश्छल होना कोई दोष नहीं, कोई मानें ना इसे दुर्बलता।
कभी कर न सके कोई प्रवंचना, द्रोही चाहे जितना हो बड़ा।
आघात करें, प्रतिघात करें, अब एक नई शुरुआत करें।।

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन-राजभाषा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

मुस्कुराता रहे जीवन

घटना जनवरी 2019 की है। अभी हम कोरोना के प्रकोप से अनजान थे। बस उड़ती-उड़ती खबरें आ रही थी कि चाइना में कोरोना नामक संक्रामक बीमारी तेजी से फ़ैल रही है। हम सब इसकी विभीषिका से अनजान, अलग ही दुनिया में जी रहे थे। मेरी बेटी का विवाह तय हो गया था और उसके विवाह के लिए ढेर सारे कपड़े हमें खरीदने थे। उसके लिए, मेरे लिए कांजीवरम की साड़ियाँ, ससुराल वालों के लिए और हमारे रिश्तेदारों के लिए भी कपड़े खरीदने थे।

मैं अपनी बेटी और मेरी एक अंतरंग सखी के साथ खरीदारी के लिए हैदराबाद गई। हैदराबाद शहर वाकई अपने आप में अनूठा है। बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल्स, खूब सारी सजी-धजी दुकानें। हम सब सुबह-सुबह अमीरपेट पहुँच गए। हमने एक बड़ी सी दुकान में लगभग दो लाख की शॉपिंग, बिटिया के लिए कर डाली। अब ये ज़माना नकद पैसा रखने का तो है नहीं। सो मैं चार डेबिट कार्ड साथ लेकर गई थी। अब रिश्तेदारों और ससुराल वालों के लिए, खरीदारी करने हम दूसरी दुकान पर पहुँचे। दुकान क्या? चार तल का शॉपिंग मॉल था, जिसमें रंग, राशि और डिज़ाइन के भारी विकल्प मौजूद थे। हमने ढेर सारी खरीदारी की। जब बिल के भुगतान की बारी आई तो कुछ बिलों के भुगतान के बाद हमारे सारे डेबिट कार्ड पर "ट्रांजैक्शन लिमिट एक्सीड" संदेश आ गया। यानि कि, एक दिन में खर्च की जा सकने वाली राशि की सीमा समाप्त।

मैं बहुत परेशान हो गई। मुझे 80,000 रूपये का भुगतान करना है और अगले ही दिन सुबह हमारी वापसी भी है। यह खरीदारी बहुत ज़रूरी है। ऐसी स्थिति में अचानक मुझे सूझा कि, मेरे पास अलग-अलग बैंकों के चार डेबिट कार्ड हैं। यदि एटीएम से जाकर में पैसे निकालना चाहूँ, तो उन डेबिट कार्ड्स से 20- 20 हज़ार की सीमा के बावजूद 80000 रु. तो मैं निकाल ही सकती हूँ। परंतु नया शहर, मुझे यह भी नहीं पता कि आस-पास एटीएम कहाँ हैं?

तभी उस दुकान में ही काम करने वाले एक सेल्समैन ने आगे बढ़कर मुझसे पूछा- "मैडम कोई समस्या है क्या?" मैंने उसे बताया- "भाई आस-पास कोई एटीएम है क्या? मुझे कैश निकालना है।" वह बोला- "आप बिलकुल फ़िक्र न करें, एटीएम बस पास में ही है। आइए, मैं आपको लिए चलता हूँ।"

शाम हो चली थी, अंधेरा गहरा रहा था। आस-पास भीड़ भी अच्छी-खासी थी। मैंने उसे साथ चलने को कहा। रास्ते में मैंने उससे कुछ बातचीत की। पता नहीं क्यों, उसकी बातों से, मुझे वो थोड़ा सा संदेहास्पद लगने लगा। मैं थोड़ी सी विचलित हुई, लेकिन मैंने अपने चेहरे के हाव-भाव शांत रखे। वह मुझे कुछ गलियों से लेकर थोड़ी अँधेरी सी जगह ले गया, सामने एटीएम था।

मैंने एटीएम से पैसे निकालने के लिए कार्ड डाला। वह एटीएम के बाहर खड़ा, एक-दो लोगों से बातचीत करने लगा। मैं थोड़ी सशंकित हुई। मन में दुविधा हुई... कैश निकालूँ या नहीं? इतने में वह एटीएम के अंदर आ गया। अब मैं बहुत घबरा गई। फिर भी मैंने चेहरे से यह बिल्कुल प्रदर्शित नहीं होने दिया। वह बहुत आश्वस्त करने वाली मुद्रा में खड़ा था, बोला आप एक साथ इतना सारा कैश निकाल रही हैं, इसलिए मैंने बाकी लोगों को दूसरे एटीएम जाने को बोला।

इधर भारी अंदेशे और दुविधा के बावजूद अंततः मैंने साहसिक निर्णय लिया। मैंने तय किया कि कैश निकाला जाय, घबराने से काम नहीं चलेगा। मैंने कैश निकाल लिया। उसके बाद वह मुझे साथ लेकर, बिल्कुल सुरक्षा का घेरा बनाते हुए, बहुत ही सावधानी से और सुरक्षा देते हुए हल्की-फुल्की बातचीत करते हुए वापस मॉल के अंदर स्थित अपने दुकान तक लेकर आया।

कई बार हम अनजान व्यक्तियों पर अविश्वास कर जाते हैं। नया शहर था, और वह भी समझ गया था कि मैं उस शहर की निवासी नहीं हूँ, लेकिन उसने मुझे जो विश्वास और सुरक्षा प्रदान की, वह मैं उम्र भर भूल नहीं सकती।

जब मैंने उसे धन्यवाद दिया, तो उसने कहा- "इसमें धन्यवाद की क्या बात है? ये मेरा फ़र्ज़ था। आप तो मेरी बड़ी दीदी के समान हैं।" यह सुनकर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ। अब बारी मेरे फ़र्ज़ की थी। मैंने उस मॉल के सीनियर मैनेजर को बुलाकर कहा कि, आपके यहाँ, ये जो सेल्समैन हैं, वे वाकई बहुत विनम्र, सहयोगी और भरोसेमंद हैं। मैंने उनकी पदोन्नति के लिए सिफारिश भी की। खुशी-खुशी खरीदारी समाप्त कर एक नया और सुखद अनुभव लेकर वापस आई।

अनुराधा धनांक
उप मंडल अभियंता (राजभाषा)
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

मृत्यु

अकाल मृत्यु है निकट, समय की ये घड़ी विकट,
हृदय में ऊहापोह है, क्या समीप है, कोई संकट।
विपदा चाहे कोई हो, शूरवीर हैं तटस्थ,
ना डरे कभी, ना झुके कभी, खड़े रहें अविचल सतत्।

चाहे अकाल या बाढ़ हो, या हो केदार सी प्रलय
निकाल ही लेते मझधार से, विशिष्ट हैं सारे केवट।
नित नमन है, करतल ध्वनि है, ऐसे वीरों का सम्मान है
इनके रहते है सुरक्षा, ना दूर तक कोई संकट।

अड़े रहें, लड़े रहें, ये जूझते हैं जीवन से,
भारत माँ का स्नेह ही, है सूर्यपुत्र सा कवच।
कभी उरी में तो कभी पुलवामा, रक्षक बन, हैं ये खड़े
एक वीरगति को प्राप्त हो, तो सौ जवान होते प्रकट।

आकाश शर्मा "दीवाना"
वरिष्ठ प्रबंधक (प्रचालन)
एन. एस. पी. सी. एल. भिलाई

वीर

वीर छोटी-मोटी बातों से परेशान नहीं होते,
ये इम्तिहान हौसलों से अधिक बलवान नहीं होते।
बड़े सपनों सपनों के युद्ध कभी आसान नहीं होते,
मोर्चे पर डटे रहकर भी कभी हलाकान नहीं होते।

आँधियों में डगमगाने वाले गुणवान नहीं होते,
स्वयं पर भरोसा न रखनेवाले विद्वान नहीं होते।
धरती के सभी प्राणी एक समान नहीं होते,
बिना सपनों के जीने वाले क़ाबिल इंसान नहीं होते।

डर जाएँ जो हार से वे कर्मवान नहीं होते,
कोशिशों की डगर छोड़ दें वो ऊर्जावान नहीं होते।
अँधेरे से घबराने वाले मनुष्य धैर्यवान नहीं होते,
आसानी से जो पूरे हो जाएँ वो अरमान नहीं होते।

ऐ राहगुज़र

ऐ राहगुज़र, कभी न ठहर
एक दो पहर, सुबह या सहर।
राह या डगर, ना कर फिकर
चल निरंतर, मिटा सारे अंतर।
जाड़ा वर्षा ज्वार, समय के अनुसार
धर ले आकार, हो नाव पे सवार।
साथी या हमसफ़र, न छूटे उधर
थोड़ा हाथ धर, खींच ले ऊपर।
हँसी का मंतर, भेद ना अंतर
श्रम निरंतर, आस स्वयं पर।
उठा कर सर, हटा कर डर
पुनः शुरू कर, तू हो जा अमर।

बारिश की बूँदें

टिप-टिप ये बूँदें बारिश की, क्या आहट हैं किसी साजिश की?
सूखे पत्तियों की गुजारिश की, एक उम्र से दबी ख्वाहिश की।
टिप-टिप ये बूँदें बारिश की।

मन मंदिर में चीर उमंग की, खामोश होते ग्रीष्म के रंग की
खिलखिलाते मोंगरे के सुगंध की, लहलहाती धरा से संबंध की।
टिप-टिप ये बूँदें बारिश की।

सजनी के उड़ते केशों की, उत्साह से लबालब हर रेशों की
आंदोलित करते उद्घोषों की, नवपल्लवित होते संदेशों की।
टिप-टिप ये बूँदें बारिश की।

आरती में नगाड़ों संग ढोलों की, तुतलाते बच्चों के मीठे बोलों की
खुशियाँ उगलते केसरी शोलों की, या ठण्डे बर्फ के नर्म गोलों की।
टिप-टिप ये बूँदें बारिश की।

आसमां के इन्द्रधनुष की, बुजुर्गों के अनमोल आशीष की
रिश्तों को जोड़ते कोशिश की, अपनों से क्षमा चाहते टीस की।
टिप-टिप ये बूँदें बारिश की।

दबी बचपन के प्रीत की, एक बिछड़े से मनमीत की,
किसी सुहाने से गीत की, हारी हुई बाज़ी में जीत की।
टिप-टिप ये बूँदें बारिश की।

ओ. पी. गोंदुले
वरिष्ठ प्रबंधक
एन. एस. पी. सी. एल.

मेरी माटी, मेरा देश

भारत, एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता से भरपूर देश है, जो विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का घर है।

माटी एक अनमोल धरोहर है, जो हर व्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह हमारे जीवन का आधार बनती है, जिससे हमारी पोषण एवं संरचना होती है। मेरी माटी ने मुझे शिक्षा दी है, मेरा संस्कार निर्मित किया है और मेरे विकास के मार्ग में मदद की है।

मेरी माटी मेरा देश है, क्योंकि यह हमारे संस्कृति, परंपरा और भाषा का घर है। हर भारतीय अपनी माटी से गहरा संबंध रखता है और इसमें गर्व महसूस करता है। यहां विभिन्न धरोहर, रंग, भाषा और जीवनशैली मिलती है, जो हमारे देश को विशेष बनाते हैं। मेरी माटी के समृद्धि और संसाधनों के कारण, हमारे देश में विभिन्न प्रकार के खेती और उद्योग विकसित हुए हैं। यहां कृषि हमारे लिए आत्मनिर्भरता का माध्यम बनती है, जबकि उद्योग हमें विश्वस्तरीय बाज़ार में स्थान बनाने में मदद करते हैं।

मेरी माटी के सुंदर वन्य जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य ने मुझे अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाया है। हमारे देश में विभिन्न प्राकृतिक स्थल, नदियाँ और पर्वतों का समृद्ध विकास है, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

15 अगस्त के दिन सभी भारतीय एक राष्ट्रीय पर्व मनाते हैं, जिसे स्वतंत्र दिवस के नाम से जाना जाता है। लगभग 200 सालों के बाद हमारा देश अंग्रेज़ो की गुलामी की ज़जीर से 15 अगस्त 1947 के दिन आज़ाद हुआ था। देश को आज़ादी दिलाने के लिए कई स्वतंत्रता सेनानियों ने कठोर संघर्ष किया है। स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद हुए सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए "मेरी माटी मेरा देश" कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

"मेरी माटी मेरा देश" अभियान का महत्व

भारतवासियों के लिए यह कार्यक्रम काफी महत्व रखता है, जिस तरह से हम आज़ादी के जश्न को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं, उसी तरह इस अभियान को भी हमें मनाना है। ये अभियान देश के नागरिकों को उन स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताया जो भारत की आज़ादी के लड़ाई में शहीद होने के बाद गुमनाम रह गए। स्वतंत्रता की लड़ाई में सभी स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित श्रद्धांजलि प्राप्त हुई लेकिन कुछ स्वतंत्रता सेनानी इन चीज़ो से वंचित रह गए। यह कार्यक्रम सभी भारतवासियों के मन में उन स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान जगाएगा और देश के युवाओं के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करेगा।

प्रधानमंत्री जी के अनुसार इस अभियान की शुरुआत 9 अगस्त से 15 अगस्त तक चलाया जाएगा, 8 अगस्त के दिन भारत छोड़ो अभियान की वर्षगाँठ मनाई गई थी। इस अभियान में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में देश के प्रत्येक गाँव, नगर पालिका निगम, राज्य स्तर पर लोग शामिल होंगे। अभियान के तहत भारत के प्रत्येक गाँव से मिट्टी को लाया जाएगा और इस कार्यक्रम के समापन पर कर्तव्य कर अमृत वाटिका को विकसित करने के लिए इस मिट्टी का उपयोग किया जाएगा।

"मेरी माटी मेरा देश" कार्यक्रम के अंतर्गत स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद होने वाले सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी गई। सभी स्वतंत्रता सेनानी भारत को ऐसे देश के रूप में देखना चाहते थे, जहाँ सभी लोग एक साथ रहते हों और देश के किसी भी हिस्से का बँटवारा ना हुआ हो। स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत की जिस माटी के लिए अपनी जान दी है "मेरी माटी मेरा देश" अभियान के अंतर्गत देश के अलग-अलग हिस्सों से माटी लाई गई, एवं उस माटी का इस्तेमाल दिल्ली के कर्तव्य पथ पर बनी हुई अमृत वाटिका को विकसित करने के लिए किया जा रहा है। स्वतंत्रता सेनानियों के याद में वृक्ष भी लगाए गए, जिन्हें देश की मिट्टी से पोषित किया जाएगा। इसके अलावा अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, योग प्रदर्शन कार्यक्रम बेहद सफल रहे और इसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा दिए गए बलिदानों के लिए एक उपयुक्त श्रद्धांजलि है। यह उस जिम्मेदारी की भी याद दिलाता है कि हम सभी को एक मजबूत और समृद्ध भारत का निर्माण करना है।

"मिट्टी को नमन, वीरों को वंदन"

सदाशिव मोकल
एस एफ टी के
फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

'मोह भंग'

क्या सही, क्या गलत, क्या पता?
ये मामला सुनने में व्यावहारिक है।
कृपया कुर्सी की पेटी बाँध लें श्रीमान !
ये कविता सत्य घटना पर आधारित है।।

वित्त विभाग में भर्ती के ज़रा पहले,
हमें कहा के प्लांट तो घूम आओ भाई।
ओर हैंडलिंग प्लांट कहाँ है? पूछा किसी से,
तो दूरी उन्होंने रायपुर जितनी बताई।
चलते ही देखा, तपती दोपहरी सर पे भारी,
बाकी की जान हमारी सेफ्टी शू ने निकाली।
कार तो रुकवा दी उन्होंने गेट के बाहर,
दूरी से डरते हुए हमने अपनी खोपड़ी संभाली।
कारखाना पार करते गए हर कारखाने के बाद,
इतने कभी नहीं टूटे, हम मार खाने के बाद।
एक भले व्यक्ति ने तरस खाकर गाड़ी रोकी,
जैसे पहली जीत मिली हो, हार जाने के बाद।।
ओर हैंडलिंग प्लांट आ कर हमें गाड़ी से उतारा,
कौन विभाग के हो बेटा, कह कर हमें पुचकारा।
'वित्त विभाग' कह कर, कर दिया हमने कबाड़ा
"पहले बताते, तो नहीं बिठाते" कह कर हमें लताड़ा।
वित्त विभाग से इतना गुस्सा, कर गया मुझे यूँ दंग
अधिकारी बनने की ख़ुशी का भैया, मोह हो गया भंग।

अलंकार समद्दार
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

'सुरक्षा गीत'

सुरक्षा के नियम बने है, नियमों का मानो विधान।
जोख़िम लिए बिना ही इससे, होता काम आसान।।
एसओपी और एसएमपी से, नहीं बिगड़े कोई काम।
सुरक्षा जो अपनाया तो, दूर होय जोखिम का नाम।
सुखद होता इसका परिणाम, यही विश्वास दिलाता हूँ।
आओ सुरक्षा का मैं सबको गीत सुनाता हूँ।
गीत सुनाता हूँ, सुरक्षित राह सुझाता हूँ।
जूता टोपी और दस्ताना, काम से पहले इसे लगाना।
बिना सुरक्षा जीवन कैसा? खुले बिजली के तारों-जैसा।।
एक लक्ष्य है एक ही नारा, रहे सुरक्षित ये तन प्यारा।
गति सीमा में वाहन चलाना, सड़क सुरक्षा को अपनाना।।
हो मानव मशीन उत्पाद सलामत,यही मैं युक्ति सुझाता हूँ।
आओ सुरक्षा का मैं सबको गीत सुनाता हूँ।
गीत सुनाता हूँ, सुरक्षित राह सुझाता हूँ।
ऊँचाई पर काम है करना, सुरक्षा- हार्नेस का हो गहना।
सतत् सुरक्षा व्यवहार हो अपना, दुर्घटना बन जाए सपना।
नादानी मत करना इंसान, सुरक्षित कर्म ही तेरी शान।
वह स्थान जहाँ पर जाकर, करना होगा काम।
सुरक्षा के हों सब इंतज़ाम, यही एक मंत्र सुझाता हूँ।
आओ सुरक्षा का मैं सबको गीत सुनाता हूँ।
गीत सुनाता हूँ, सुरक्षित राह सुझाता हूँ।
गैस क्षेत्र में जब भी जाओ, गैस मॉनिटर, संग ले जाओ।
इसके बिन मुश्किल पहचान, गैस का खतरा लेती जान
रिस्क नहीं हमको है लेना, जीवन है सबका अनमोल।
काम छोड़ हट जाओ वहाँ से, लगे सुरक्षा पर हो झोल।
सुरक्षा बहुत ज़रूरी है, यही सबको हर बार बताता हूँ।
आओ सुरक्षा का मैं सबको गीत सुनाता हूँ।
गीत सुनाता हूँ, सुरक्षित राह सुझाता हूँ।

किशोर कुमार नशीने
सी. एम. ओ. सी. टी.
एल. डी. सी. पी., भिलाई इस्पात संयंत्र

'मेरी माटी मेरा देश'

मेरी माटी मेरा देश अभियान की शुरूआत भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा की गई है । यह अभियान भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव के समापन कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय स्तर का एक बड़ा अभियान है। इसके साथ ही स्कूल कॉलेज में भी **"मेरी माटी मेरा देश"** अभियान थीम पर विभिन्न कार्यक्रमों की पेशकश एवं प्रतियोगिताएं रखी जाएंगी । प्रधानमंत्री द्वारा चलाए गए **"हर घर तिरंगा"** अभियान में संपूर्ण भारतवासियों ने हिस्सा लेकर इस अभियान को सफल बनाया था ।

यह अभियान मुख्य रूप से 9 अगस्त से लेकर 15 अगस्त तक देश के ऐतिहासिक स्थलों पर चलाया जाता है जबकि सम्पूर्ण भरत के विभिन्न हिस्सों में इस अभियान के तहत 30 अगस्त तक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है ।

जिसमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए गुमनाम शहीदों के नाम अंकित किए जाएंगे । इस वर्ष मेरी माटी मेरा देश अभियान चलाया गया है जो देश के गुमनाम शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का एक सुअवसर है । इस साल 15 अगस्त को 76 वर्ष पूरे हो जाएंगे, मेरी माटी मेरा देश अभियान के अंतर्गत देश भर में भारत के प्रत्येक गाँव से करीब 7500 कलशों में मिट्टी को लाया जाएगा और इस मिट्टी का उपयोग राजधानी दिल्ली के कर्तव्य पथ पर अमृत वाटिका उद्यान को बनाने के काम में लिया जाएगा । इसके साथ ही शहीदों के नाम पर स्मारक भी बनाया जाएगा ।

विनय प्रकाश बारी
ओ. सी. टी. सामग्री प्रबंधन विभाग,
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

बेटियाँ

छोड़ देहलीज़ घर की, बेटियाँ भी कुछ करने लगी हैं,
हर मुश्किल का सामना, खुद से करने लगी हैं।
छोड़ पल्लू माँ का, साये से अलग पिता के,
अपनी छवि गढ़ने लगी हैं।
छोड़ दहलीज़ घर की, बेटियाँ भी कुछ करने लगी हैं।
बहुत हुआ अन्याय और अत्याचार, बेटियाँ इनसे खुद लड़ने लगी हैं,
जमीं से आसमां तक बेटियाँ, अपना परचम लहराने लगी हैं।
छोड़ दहलीज़ घर की, बेटियाँ भी कुछ करने लगी हैं।
दूर हो घर से अपनी बेटियाँ, दुनिया अपनी नई बनाने लगी हैं,
छोड़ दहलीज़ घर की, बेटियाँ भी कुछ करने लगी हैं।

सफ़र ख़्वाहिशों का

कभी पूरी नही होतीं ये हसरतें, अधूरी रहती चाहतें,
अधूरी चाहतों की तामीर के लिए,
अधूरे ख़्वाबों की ताबीर के लिए,
हक़ीक़त और ख़्वाबों के दरमियाँ,
सरकती चली जा रही ये ज़िन्दगी
कल खो दिया हमने आज के लिए,
आज खो दिया हमने कल के लिए,
कभी जी ना सके हम आज,
आज के लिए
कल आज और कल के दरमियाँ,
गुजरती चली जा रही ये ज़िन्दगी।

सबक ज़िन्दगी के

संभल कर चले ज़िन्दगी में फिर भी,
हादसे कहीं न कहीं अनजाने हो गए,
गलियाँ क्या छोड़ीं अपनी एक बार,
नज़रों में अपनों के बेगाने हो गए,
वक़्त की आँधी में उड़ते रहे इस क़दर,
ठोकरें खा ज़माने की सयाने हो गए,
मतलब की इस दुनियाँ में देखा यही,
काम हुआ, अपने सब पराए हो गए।।
दरवेश सी ज़िन्दगी में पता क्या बताते,
जहाँ गए रोटी कमाने, वहीं के हो गए।

एक आस, एक विश्वास

हर दिन है, एक हादसा ज़िन्दगी,
हर दिन लाती कुछ नए हालात
हर दिन है इक आँख मिचौली,
हर दिन है ज़िन्दगी से नई मुलाक़ात
कीमत यहाँ लिबास की है,
परखे कौन अब जज़्बात
खोटे सिक्कों की दुनियाँ में,
सच्चे की कौन सुने अब बात
क़तरा क़तरा निचुड़ गया, सूखी रह गई गात
हैरां हूं देख पाबंदी वक़्त की,
कोई दर्द बाकी न रखे लम्हात,
कभी यकीं को ढलने न दिया
रखी बस एक आस एक विश्वास,
आखिर गुज़र ही जाएगी ज़रूर
कितनी भी लम्बी हो यह, स्याह काली रात
रखी बस एक आस एक विश्वास,
गुजर जाएगी ज़रूर,
कितनी भी लम्बी हो यह, स्याह काली रात।

मैं

मुझमें झाँक सकते हो, ज़्यादा गहरा नहीं हूँ मैं।
रास्तों की मुश्किलों में भी, कहीं ठहरा नहीं हूँ मैं।
इतना आसान हूँ कि, छू लेता है, कोई भी मुझको।
खुली किताब के जैसा हूँ, कोई ककहरा नहीं हूँ मैं।
शज़र हूँ, रहगुज़र का मुसाफ़िर,
आओ साँस लो बैठो छाँव में।
तबीयत ताज़गी है मेरी,
तपता सहरा नहीं हूँ मैं।
कुछ भी तो मुख्तलिफ़ नहीं,
मेरी तुम्हारी ज़िन्दगी।
एक मुकम्मल किरदार हूँ,
फ़क़त चेहरा नहीं हूँ मैं।

नितिन गोस्वामी
सहायक अधीक्षक
डाक विभाग

मैं घूमता क्यों हूँ?

पृथ्वी लगातार घूम रही है। सूरज, चाँद, तारे सब घूम रहे हैं। जो चेतन है, वह घूम रहा है। जिसे हम जड़ कहते हैं, वह प्रकृति भी लगातार घूमने की चेष्टा कर रही है। इसलिए ना घूमना, घूमने की चेष्टा नहीं करना जड़ से बदतर होने की ओर इशारा करती है। कहते हैं बहता हुआ पानी कैसा भी दिखे, वह शुद्ध ही होता है। रुका हुआ पानी कैसा भी दिखे उसमें काई और कीटाणु पल ही जाते हैं। जीवन भी ऐसा ही है। जो ज़िन्दगी चलती है उसमें काई नहीं जमती उसकी धार बनी रहती है, उसमें तरलता होती है और सरलता विकसित होती रहती है। इसलिए घूमना, घूमते रहना, घूमते रहने की इच्छा करना, रस पैदा करता है और जीवन को रसीला बनाता है।

पौराणिक संसार की कथाएँ बताती हैं कि बिना घूमे कोई शक्तिशाली नहीं बना है। सागर तट वाली लंका से रावण को हिमालय आना पड़ा। अर्जुन को पाशुपत प्राप्त करने के लिए किरात की खोज में घूमना पड़ा। कर्ण ने भी अनेक यात्राएँ की, तब उसे शस्त्र मिले। राम को भी भृगु, भारद्वाज, विश्वामित्र, अगस्त्य ऋषि की खोज में घूमना पड़ा। कृष्ण, मथुरा से निकलकर उज्जयिनी के ऋषि सांदीपनि तक पहुँचे। महान व्यक्तियों के साथ यात्रा जुड़ी हुई हैं। महात्मा जी ने अनेक यात्राओं के माध्यम से राजनीति को धार दी। कुछ पाना है तो यात्रा करनी ही पड़ेगी। कहीं लिखा है- 'जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ'। किनारे रहकर एक जगह ठहर कर ना कोई शक्तिमान हो सकता है और ना ही बुद्धिमान।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने 'मैं क्यों लिखता हूँ?' लिखा है। जिसमें लिखने के भाव, लिखने की शुरुआत किसने की, लिखने के उद्देश्य क्या हैं ? आदि विषयों को स्पष्ट करने की कोशिश की है। दार्शनिक मनोभावों को प्रकट करने की भी कोशिश की गई थी। अंत में यही कहा गया कि, 'मैं क्यों लिखता हूँ' इसे जानने के लिए ही लिखना पड़ता है। हरि अनंत हरि कथा अनंता। चिंतनीय तत्व अंतहीन होते हैं। गहराई पर उतरने पर पता लगता है कि यह कितना गहरा है। किनारे पर बैठने पर सबकी थाह आसान लगती है।

मैं जब हरियाणा में था, तब अपने गुरुदेव पूज्य स्वामी बलेश्वरानंद सरस्वती जी के संपर्क में एक ऐसे व्यक्ति से मिला जिसने पूरे जीवन में अपने गाँव की सीमा का ख्याल रखा और अपने गाँव की सीमा या देहलीज़ को कभी पार नहीं किया। यह बात वे बहुत ही फ़ख्र और गर्व के साथ बताया करते थे। मुझे लगता है कि कूप मंडूक होना भी कुछ लोगों के लिए गर्व की बात हो सकती है। उपनिषद् कहते हैं कि 'भूमा वै सुखं नाल्पे सुखमस्ति' विराट होने में सुख है, अपने दायरे को कम करने या सिमटने में सुख नहीं है।

राहुल सांकृत्यायन को भ्रमण शास्त्र का ज्ञाता माना जाता है, उनका ज्ञान, यात्राओं पर आधारित है। तरह-तरह की संस्कृति, संस्कार, विचार, परंपरा, आहार-विहार और व्यवहार की जानकारी बिना घूमे नहीं जानी जा सकती। आदि गुरु शंकराचार्य से लेकर स्वामी दयानंद सरस्वती तक महापुरुषों ने गली-गली, जंगल-जंगल, पर्वत-पर्वत की खाक छानकर ज्ञान के तत्व ढूंढे थे या इकट्ठे किए थे। इन सभी के भ्रमण अनुभव को पढ़ना एक अनोखे दार्शनिक शास्त्र की अनुभूति कराता है।

घूमते सभी हैं किंतु पहुँचते बहुत कम हैं। कुछ घूमते-घूमते खुद से दूर हो जाते हैं। कुछ घूमते-घूमते खुद के पास हो जाते हैं। सब के उद्देश्य अलग होते हैं। कोई सुकून की खोज में खुद से दूर होना चाहता है और कोई सुकून की खोज में खुद के पास होना चाहता है। जैसे पीने वालों को पीने का बहाना चाहिए, वैसे ही घूमने वालों को घूमने का बहाना चाहिए। इस बहाने के लिए शायद बहाने की जरूरत नहीं होती। कुछ लोग पूरी ज़िन्दगी नहीं घूमने के बहाने लिए बैठे रहते हैं। बच्चों की परीक्षा है तो नहीं घूम सकते। कामवाली बाई की छुट्टी है तो नहीं घूम सकते। थकान है, इसलिए नहीं घूम सकते। तनाव है, इसलिए नहीं घूम सकते। ऑफिस में काम है, इसलिए नहीं घूम सकते। परिवार में त्योहार है या समारोह है, इसलिए नहीं घूम सकते। कुछ लोग बीमारी के कारण नहीं घूमते। मुझे लगता है कुछ लोगों को नहीं घूमने की भी बीमारी होती है। घूमने वालों को घूमने का बहाना चाहिए। चार दोस्त इकट्ठे हो गए तो घूमना। तनाव है तो घूमना। त्योहार है तो घूमना। छुट्टी है तो घूमना। कुछ काम नहीं है तो घूमना। कुछ काम है, इसलिए घूमना।

मैंने अनुभव किया है कि, हमारे बहुत से सहकर्मी कार्यालयीन कार्यों से इधर-उधर भेजे जाने पर बहुत परेशान रहते हैं। मेरा स्वभाव विपरीत है। मैं घूमने के बहाने ढूंढता हूँ। अक्सर कहता हूँ दूरदराज का काम हो, कोई प्रशिक्षण योजना हो तो मुझे अवश्य भेजा जाए। मुझे घूमना, नए लोगों से मिलना बहुत पसंद है। नए लोगों के सोचने का ढंग निराला होता है, अलग होता है। किसी भी घटना या काम को किस किस तरीके से किस किस नजरिए से देखा जा सकता है? यह उनसे मिलकर ही पता लगता है। प्रकृति की रमणीयता का कारण कालिदास की दृष्टि में उसका नयापन ही है। हर वह चीज नई है, जिसे आप अपने आसपास नहीं देखते रूटीन में नहीं देखते। दिनचर्या के साथ नहीं देखते। जो दूसरों के लिए नया है वह हमारे लिए पुराना हो सकता है। जो हमारे लिए पुराना है, वह दूसरों के लिए नया हो सकता है। इसलिए कश्मीर का व्यक्ति कन्याकुमारी में और कन्याकुमारी का व्यक्ति कश्मीर में जाकर प्रसन्न हो जाता है। प्रसन्नता की खोज में भी घूमा जाता है। मेरी तो हर यात्रा घूमते-घूमते ही घूमने की वजह ढूंढ लेती है।

घूमना उसके लिए ही सुखदायक है जो अपने कंफ़र्ट ज़ोन से निकलने को तैयार हैं। जो डेली रूटीन और कंफ़र्ट के आदी हैं वे यात्रा से विचलित हो जाते हैं या वहाँ जाकर दुखी हो जाते हैं। सब्जी में नमक कम हो तो भी यह बहुत लोगों के दुख का कारण हो जाता है। जबकि चुटकी बजाते ही चुटकी भर नमक लेकर इस दुख को दूर किया जा सकता है। जीवन के बहुत से दुख ऐसे ही हैं जिसे चुटकियों में सुलझाया जा सकता है।

2022 की गर्मी की छुट्टियों में मैंने मुन्नार की यात्रा की। इस यात्रा ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। अपने कंफ़र्ट ज़ोन से निकलकर इस यात्रा में हमने पैदल, ऑटो, टैक्सी, बस जैसे सरकारी वाहनों का भी भरपूर प्रयोग किया। यात्रा की परेशानी ही बहुत कुछ सिखा देती है और शायद बिना परेशान हुए ज्ञान और अनुभव में वृद्धि करना संभव नहीं है। शास्त्र कहते हैं कि, पुस्तक में रखी हुई विद्या काम पड़ने पर विद्या नहीं होती मुझे लगता है सच्चाई यह है कि सिर्फ किताबों को पढ़कर, रटकर व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन सकता। ज्ञान का सबसे प्रयोजन है, दूसरों को आत्मसात करने की क्षमता विकसित करना। यह यात्रा में ही विकसित होता है। घुमक्कड़ का ज्ञान व्यावहारिक और परिपक्व होता है।

अगर कोई मुझसे पूछे कि, मैं घूमता क्यों हूँ ? तो सीधा सा उत्तर है, घूमने के लिए घूमता हूँ। दूसरों को समझने के लिए घूमता हूँ। अनजानी जगहों को देखने के लिए घूमता हूँ। घूमना आत्मविश्वास को बढ़ाता है। घूम-घूम कर घूमता हुआ व्यक्ति ही 36 घाट का पानी पीता है। नाकों चने चबाता है। मुसीबतों से दो-दो हाथ करता है। किसी की आँख का तारा बनता है किसी की आँख में किरकिरी करता है।

आजकल ट्रैवल एजेंट का जमाना है। ट्रेन या प्लेन से उतरते ही एसी गाड़ी इंतजार करती है। एसी गाड़ी से उतरते ही एसी होटल इंतजार करता है। यात्रा सुखद सरल हो गई है। पैसा फेंको तमाशा देखो। यात्रा डॉट कॉम इसी का नाम है। किंतु अत्यधिक सुखद यात्रा अत्यधिक योजनाबद्ध यात्रा, यात्रा के मूल उद्देश्यों को पूरा नहीं करती।

घूम-घूम कर ही घुमाया सकता है। हैरी पॉटर एक जादुई व्यक्तित्व है। डिक्शनरी में पॉटर शब्द अर्थ बिना उद्देश्य के घूमनेवाला लिखा है। कटु सत्य यह है कि बिना घूमे हैरी पॉटर भी नहीं बन सकते। प्रकृति एक विशाल किताब की तरह है, जिसका हर एक पन्ना जादुई रहस्य, रोमांच और संदेशों से भरा हुआ है। बिना घूमे इन्हें अनुभव नहीं किया जा सकता।

मैं घूमता क्यों हूँ ? इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं मिलता। मैं घूमता हूँ, खुद से मिलने के लिए। मैं घूमता हूँ, खुद से बात करने के लिए। मैं घूमता हूँ, नए पंखों को उड़ान देने के लिए। मैं घूमता हूँ, आराम के लिए, विश्राम के लिए और कभी-कभी थकने के लिए। मैं घूमता हूँ, परेशान होने के लिए। मैं घूमता हूँ, अपनी क्षमता को आजमाने के लिए। मैं घूमता हूँ, खुद को पाने के लिए। मैं घूमता हूँ, खुद को आजमाने के लिए। मैं घूमता हूँ, जमाने से जुड़ने के लिए। मैं घूमता हूँ, घूमने के लिए। मैं घूमता हूँ, ठहराव के लिए। मैं घूमता हूँ, बहने के लिए। मैं घूमता हूँ, टिकने के लिए। मैं घूमता हूँ, खुद को पाने के लिए।

सच्चाई यह है कि, जिस प्रश्न के लाख उत्तर हों, वह प्रश्न कभी हल नहीं होता। हल भी हो सके तो भी कोई बात नहीं क्योंकि मुझे इतनी जल्दी भी नहीं है। प्रश्न हल आज हो या कल हो, क्या फर्क पड़ता है। आने वाले कल के बाद आनेवाला परसों खड़ा है। जीवन के सवालों को सुलझाने की जल्दी और जल्दबाजी नहीं है, इसीलिए घूमना हो पाता है। घूमने का गणित भी कई संदर्भों में चलता है। कभी बॉस घुमाता है कभी क्लर्क घुमाता है। घूम-घूम कर रिलैक्सो ऑफिस चप्पल की घिसाई हो जाती है। एक साधारण सामान्य से आवेदन में हस्ताक्षर लेने के लिए भी बॉस के चक्कर काटने पड़ते हैं। कभी वह बैठते नहीं हैं, कभी उस पर विचार कर रहे होते हैं। कभी थोड़ी देर बाद आना, अभी मैं व्यस्त हूँ, अभी कोई मिलने आया है, अभी कुछ ज़रूरी काम कर रहा हूँ, जैसे कितने बहाने घुमाने के होते हैं। शायद उसकी गिनती नहीं है। मेरे एक बॉस थे। शायद अब भी हैं किंतु कोई संपर्क नहीं है। उन्होंने कभी खुद पर भरोसा नहीं किया। इसलिए मुझ पर भी भरोसा नहीं किया। मैं ऐसा मानता हूँ या अनुभव ने मुझे यह बताया, सिखाया है कि, जो खुद पर भरोसा नहीं करता वह दुनिया में किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकता। उन्होंने मेरे स्थानांतरण पर शायद मिठाई बाँटी थी। वहाँ माहौल ऐसा था कि मेरे इर्द-गिर्द रहने वालों को अक्सर आगाह किया जाता था कि मेरे साथ घूमने पर कार्यवाही हो सकती हैं। लोगों का घूमना बंद नहीं हुआ लेकिन वे उन्हें देखते थे और वही दिखाने की कोशिश करते थे जो वह देखना चाहते हैं।

उसी दौरान मैंने एक कविता लिखी थी 'परिंदे उड़ ही जाते हैं'। इस कविता में मैंने अपने उन मित्रों को जवाब देने की कोशिश की थी, जो मित्र मुझसे अक्सर पूछते थे यहाँ आराम होने के बावजूद भी आप स्थानांतरण के लिए क्यों आवेदन कर रहे हैं या आप ने स्थानांतरण क्यों मांगा ? किसी विचारक ने लिखा है जहाँ आपके जाने से प्रसन्नता ना हो वहाँ अगर कंचन भी बरसे तो भी नहीं जाना चाहिए। यह बात मुझे अच्छी लगती है। जहाँ आपकी उपस्थिति और आपका साथ कुछ लोगों की परेशानी, दुख या बेचैनी का कारण बने उस जगह को छोड़ देने में मैं विश्वास रखता हूँ। दुनिया बहुत बड़ी है। हम कहीं भी घूम सकते हैं। घूमने का साहस आपको सबका बना देता है।

आधुनिक गुरु को शिष्य घुमाता है। गुरु की परिक्रमा करने वाला युग बीत गया। आज नगद कल उधार के संदर्भ में उधार लेने वाला सेठ बन जाता है और उधार देने वाला गिड़गिड़ाता हुआ ग़रीब। उधार लेने की कला जानने वाले उधार लेकर उधार देने वाले को आज, कल, अब, तब, कह कर खूब घुमाते हैं। घुमाने की यह कला शायद हम नहीं सीख पाए। ऐसे घूमते हुए, घुमाते हुए दोनों को देखते हुए इहलोक में परलोक की याद आती है।

मैं घूमता हूँ प्रकृति को देखने के लिए। संस्कृत में सूक्ति है जिसमें लिखा है- जब तक संसार है संसार से बड़ा दूसरा कोई जादू नहीं और संसार को बनाने वाले ईश्वर से बड़ा कोई जादूगर नहीं है। यह बात सही है। हम छोटे मोटे जादू और जादूगर को देखकर अचरज में पड़ जाते हैं। सूरज का उगना सूरज का डूबना, सागर की लहरें, नदियों का बहना, झरनों का झरना, पहाड़ों का खड़ा रहना, सूरज चाँद तारों का टिमटिमाना, प्रकृति की गोद में गंगा जमुना का बहना जैसी सैकड़ों हजारों अनंत घटनाएँ है जो हम सबको नित्य अचरज में डालती हैं। घूमने-घुमाने का एक उद्देश्य इन से रूबरू होना भी है। प्रकृति के, सृष्टि के जितने निकट जाओ सृष्टि कर्ता की याद उतनी प्रगाढ़ हो जाती है। मैं घूमता क्यों हूँ? यह शायद अभी तक जान नहीं पाया हूँ। जब तक जान नहीं जाऊंगा तब तक घूमता रहूँगा। घूम-घूम कर जान लूंगा कि मैं घूमता क्यों हूँ?

हम लोग सामान्यतः चावल चम्मच से खाते हैं। केरल मुन्नार या कहीं भी पूरे दक्षिण भारत में और उड़ीसा में भी दाल-भात, हाथ से खाया जाता है। मैं उत्तर भारत में पला बढ़ा हूँ। इसलिए न तो चावल खाने का अभ्यस्त हूँ और हाथ से खाने का तो बिल्कुल ही नहीं। इस बार गर्मी की छुट्टियों में घूमने कोच्चि और मुन्नार की यात्रा की थी। वहाँ से लौटने के बाद मैंने देखा कि, मेरी बेटी अक्षरा हाथ से चावल खा रही है। मैंने आश्चर्य प्रकट किया तो उसने जवाब दिया मुन्नार का प्रभाव है। यात्रा के दौरान प्रभाव, सद्भाव, समभाव मिलता है। इसकी खोज में भी यात्रा की ललक मन में हिलोरे लेते रहती हैं। एक यात्रा, दूसरी यात्रा का ताना-बाना बुन ही लेती है। इस बार जब मैं मुन्नार की यात्रा कर रहा था तब मुझे मेरी प्राचार्य श्रीमती ग्लोरिया मिंज जी ने मुझे अंडमान निकोबार के अपने यात्रा संस्मरण सुनाए। यह सुनकर मैं अंडमान के बारे में पढ़ लिख सुन रहा हूँ। मित्रों से संपर्क कर रहा हूँ। अगली यात्रा अंडमान निकोबार द्वीप समूह की होगी।

यात्रा के अनेक उद्देश्य होते हैं। किसी से मिलना होता है। कोई कार्य होता है और न जाने ऐसे बहुत से छिपे हुए उद्देश्य होते हैं। जब यात्रा खुद एक उद्देश्य बन जाए तब वह यात्रा, यात्रा कही जाती है। जब यात्रा का उद्देश्य सिर्फ यात्रा रहता है तो वह मन के अंतः पटल पर अनेक उद्देश्यों को पूरा करती है। जब हम स्वयं यात्रा के सिर्फ उद्देश्य को देखते हैं तो शायद अनजाने, अबूझ, अनदेखे उद्देश्य पूरे नहीं होते। मेरी कोशिश होती है कि मैं यात्रा के बाद कुछ लिखूँ।

इस बार मुन्नार से लौटकर मैंने 'मुन्नार: एक मसालेदार शहर' यात्रा वृत्तान्त लिखा। मेरी एक मित्र ज़ॉली थॉमस जो कि केरल की रहने वाली है। उसने उस वृतांत को पढ़ कर कहा कि, केरल को उस नज़रिए से कभी हमने नहीं देखा या हम नहीं देख पाए जिस नज़रिए से केरल को आपने देखा।

मेरे एक मित्र हैं श्री एसके वर्मा। वे जब भी व्हाट्सएप के स्टेटस या फेसबुक में किए गए अपडेट्स देखते हैं तो मिलने पर यही प्रतिक्रिया करते हैं कि यार बहुत घूम रहे हो, हमें नहीं ले चलते। कभी हमारे साथ प्लान बनाओ। उनकी बातों से अक्सर यह लगता है कि वे भी घूमने के शौकीन हैं। एक दो बार हमने उनके साथ यात्राएँ कीं हैं। किंतु लगातार यात्राओं का सिलसिला नहीं बन पाता। उसका कारण यह है कि जब हमें घूमना होता है तो, हम कहाँ जा रहे हैं यह हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं होता, हम जा रहे हैं, घर से निकल रहे हैं अपनी सीमा रेखा या यह कहें कि अपने अक्ष को छोड़कर किसी दूसरे अक्ष में प्रवेश कर रहे हैं; हमारे लिए यह अधिक महत्वपूर्ण होता है । जनवरी माह में मकर संक्रांति आती है। यह मकर राशि के कारण अत्यंत प्रसिद्ध है किंतु प्रति मन एक संक्रांति आती है जिसमें सूर्य अलग-अलग राशियों में प्रवेश करता है। जब भी मैं उनसे बात करते हुए यह कहता हूँ कि चलो यार वहाँ चलते हैं। उनका जवाब होता है कि मैं वहाँ तो हो आया हूँ। मैं उनसे कहता हूँ कि, यार मैं भी वहाँ पाँच बार जा चुका हूँ, छठी बार आपके साथ जाने की योजना बना रहा था। उन्हें मेरी इस बात पर यकीन नहीं होता। जीवन में जब जाना या घूमने महत्वपूर्ण हो तो डेस्टिनेशन महत्व नहीं रखता। कई बार पास-पड़ोस के गाँव में ही घूम आता हूँ। जगह को देखने का अपना आनंद है ही लेकिन अपने दायरे को तोड़कर बाहर निकलने का भी आनंद कम नहीं। दूसरे जगह की आबोहवा, बोली, रहन-सहन, खेत खलिहान और न जाने क्या-क्या एक यात्रा को आनंदमय बना देते हैं ।

एक लेखक को एक यात्रा में लिखने का बहुत सारा मसाला मिल जाता है। साधारण जीवन में दाल को दाल-तड़का बनाना हो या जीवन को मसालेदार बनाना हो तो भी स्वभाव का घुमंतू होना आवश्यक है। उपनिषदों का सारांश भी मेरे शब्दों में 'चरैवेति चरैवेति' ही है। चर धातु में गति भी है और भोजन (चारा) भी। भोजन भजन, भजन बिन भोजन, बिन भोजन के भजन नहीं। घूमने का एक अपना शब्द शास्त्र है। घूमने का दर्शन शास्त्र भी है। इसके सौंदर्य शास्त्र के संबंध में फिर कभी चर्चा करेंगे।

ममता शर्मा ने कहीं लिखा है - सफ़र सिर्फ मंज़िलों तक पहुँचने के लिए नहीं होते बल्कि उन तमाम जगहों से गुज़रने के लिए भी होते हैं जो मंज़िल के रास्ते में पड़ती हैं..!

अन्दाज़ कुछ अलग है मेरे सोचने का...
सब को मंज़िल का शौक है और मुझे रास्तों का ..

डॉ. अजय आर्य
पी.जी.टी. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

मुझसे आकर तुम मिल लेना

जब कभी हो मन उदास,
जीवन में हो तुम हताश,
मुझसे आकर तुम मिल लेना,
नई प्राण वायु तुम ले लेना,
चंद पल बैठकर मेरे पास,
चंद पल बैठकर मेरे पास।

मन का द्वंद जब हो गहन,
जीवन में हो द्वंद्व सघन,
मुझसे आकर तुम मिल लेना,
नव उजास मन में भर लेना,
चंद पल बैठकर मेरे पास,
चंद पल बैठकर मेरे पास।

जब अपने भी हों विमुख,
विपत खड़ी मिले सम्मुख,
हों दरवाज़े जब सारे बंद,
मुझसे आकर तुम मिल लेना,
द्वार हृदय के तुम खोल लेना,
चंद पल बैठकर मेरे पास,
चंद पल बैठकर मेरे पास।

हाँ मैं मसरूफ़ हूँ

हाँ मैं मसरूफ़ हूँ,
जलती दुपहरियों में,
ठिठुरती सर्दियों में,
बरसती पानी की बौछारों में,
मैं मशरूफ़ हूँ,
अपनी मंज़िल की खोज में,
जब तुम अपनी छतों पर,
कहकहों का आनंद लेते हो,
चौराहों पर मज़मा लगा,
अपना बखान करते हो,
मैं वीरान सड़कों पर,
मीलों चलने को मजबूर हूँ,
मैं मसरूफ़ हूँ,
मुझसे शिकायत है सबको,
नहीं मेरे वादे पर किसी को ऐतबार,
हाँ नहीं होता मुझसे लोकाचार,
नहीं कर पाता मैं,
एक चेहरे से दो व्यापार,
मैं मग़रूर नहीं साहिब,
महज मसरूफ हूँ,
ज़िम्मेदारी निभाने में,
दो रोटी कमाने में,
अपनी और अपनों की,
ज़िन्दगी बनाने में,
मैं बेहद मसरूफ हूँ,
मैं बेहद मसरूफ हूँ।।

नितिन गोस्वामी
सहायक अधीक्षक
डाक विभाग

अपनी माटी अपना देश

अपनी माटी अपने देश का उद्धार करें,
इसके लिए ज़रूरी है, खुद में हम सुधार करें।
प्रदूषण किसी भी किस्म का हो ठीक नहीं है,
और भ्रष्टाचार, उससे तो तौबा सारे यार करें।
अपना उद्देश्य पूरी कायनात का भला हो,
सब तक सुविधा पहुँचे ऐसे लक्ष्यों को तैयार करें।
माटी और देश को अपना बोले और माने भी
अपनी माटी अपने देश को जान से बढ़कर प्यार करें।
अपने देश में गरीबी कलंक और कैंसर की तरह है,
सक्षम करें प्रयास और इस ग़रीबी का उपचार करें।
कुंठित और संकुचित सोच अपने लिए हानिकारक,
देश हित में आओ सारे हम अपना विस्तार करें।
अपना आचरण नस्लों को प्रेरणा दे ऐसा हो,
इस तरह नस्लों में संस्कारों की तेज़ धार करें।
अपनी माटी अपने देश का उद्धार करें,
इसके लिए जरूरी है, खुद में हम सुधार करें।

ओमवीर करन
सीनियर ओ.सी.टी.
कोक ओवन एवं कोल केमिकल विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

भिलाई शहर में प्राकृतिक खेती

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्राकृतिक खेती को लेकर दिल्ली रामलीला मैदान में प्रधानमंत्री ने नेचुरल फार्मिंग पर ज़ोर दिया। उन्होंने किसानों व सभी से प्राकृतिक खेती को अपनाने का आग्रह किया। प्राकृतिक खेती कृषि पद्धति का एक पारंपरिक रूप है, जो लोकप्रिय रूप से बैक-टू-नेचर आंदोलन से जुड़ा हुआ है। इसलिए, प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम संभव उपयोग करना है, जिससे लाभकारी मिट्टी के जीवों की गतिविधि को मारने या कम करने के लिए उत्तरदायी रसायनों के उपयोग से बचा जा सके। प्राकृतिक खेती के लिए किसी मशीन, किसी रसायन और बहुत कम निदाई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, प्राकृतिक खेती खेती की एक ऐसी पद्धति विकसित करने का एक प्रयास है, जो आधुनिक कृषि की अपक्षयी गति को उलटने में मदद कर सकती है।

नेचुरल फार्मिंग:

- प्रकृति के अनुसार जीव जन्तुओं का अपशिष्ट (CO_2, मल-मूत्र) पेड़ पौधों का भोजन है, जिन्हें ग्रहण करके पेड़ पौधे हमें भोजन हेतु फल, अनाज, एवं O_2 आदि महत्वपूर्ण और जीवनोपयोगी चीज़ें देते हैं|
- इसे "रसायन मुक्त कृषि (Chemical-Free Farming)" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- कृषि-पारिस्थितिकी के मानकों पर आधारित यह एक विविध कृषि प्रणाली है, जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैवविविधता के इष्टतम उपयोग की अनुमति मिलती है।
- यह **मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य** को बढ़ाने तथा **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन** को कम करने या न्यून करने जैसे कई अन्य लाभ प्रदान करते हुए **किसानों की आय बढ़ाने में सहायक** है।

  कृषि के इस दृष्टिकोण को एक जापानी किसान और दार्शनिक मासानोबू फुकुओका (Masanobu Fukuoka) ने 1975 में अपनी पुस्तक **द वन-स्ट्रॉ रिवॉल्यूशन** में पेश किया था।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतिक खेती को पुनर्नियोजी कृषि का एक रूप माना जाता है, जो ग्रह को बचाने के लिए एक प्रमुख रणनीति है।
- शहर के अंदर भी हम आस-पास में पेड़ पौधे लगाकर यह खेती कर सकते हैं। मैंने 300 पेड़ (अमरूद, अनार, अंजीर, बेल, कचनार/सोनपत्ती, लसौडा/बोहार भाजी/लेसवा, मुनगा/सहजन/मोरिंगा, मलबरी/शहतूत, पपीता, सिंगापुर बेरी, वेस्टइंडीज बेरी) लगाए हैं, जिनसे मुझे सब्ज़ी व फल मिलते रहते हैं और हर साल उनकी संख्या बढ़ जाती है।

नेचुरल फार्मिंग का महत्त्व:

- **बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित करना:**

  चूँकि प्राकृतिक खेती में किसी भी **सिंथेटिक रसायन का उपयोग** नहीं किया जाता है, इसलिए स्वास्थ्य जोखिम और का भय नहीं रहता। साथ ही **भोजन में उच्च पोषक तत्व** होने के कारण यह बेहतर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है।

- **सृजन:**

  प्राकृतिक खेती आगत उद्यमों, मूल्यवर्द्धन, स्थानीय क्षेत्रों में विपणन आदि के कारण रोज़गार सृजन करती है। प्राकृतिक खेती में अधिशेष का गाँव में ही निवेश किया जाता है।

  चूंकि इसमें रोज़गार सृजन की क्षमता है, जिससे ग्रामीण युवाओं का पलायन रुकेगा।
- **पर्यावरण संरक्षण:**

  यह बेहतर मृदा जीव विज्ञान, बेहतर कृषि जैव विविधता और बहुत छोटे कार्बन एवं नाइट्रोजन पदचिह्नों के साथ जल का अधिक न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करती है।

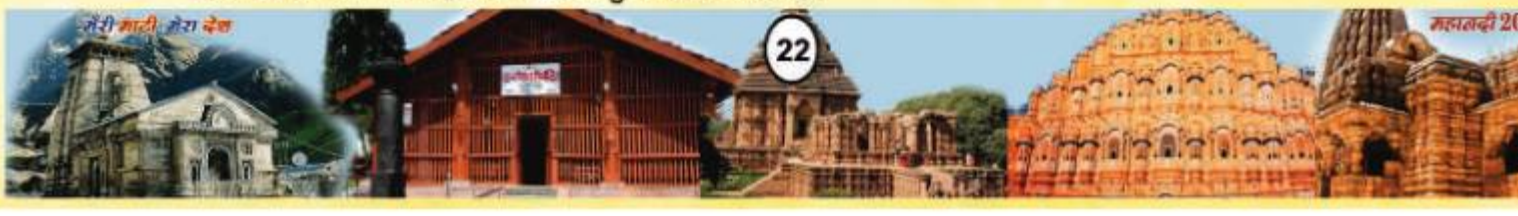

प्राकृतिक खेती से संबंधित चुनौतियाँ:

- **पैदावार में गिरावट:** सिक्किम (भारत का पहला जैविक राज्य) में जैविक खेती में परिवर्तन के बाद पैदावार में कुछ गिरावट देखी गई है।
- **प्राकृतिक आदानों की उपलब्धता का अभाव:** किसान अक्सर आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक आदानों की कमी का हवाला देते हैं जो रसायन मुक्त कृषि में संक्रमण के लिये एक बाधा के रूप में हैं। प्रत्येक किसान के पास अपना आदान बढ़ाने हेतु समय, धैर्य या श्रम नहीं होता है।

आगे की राह

- उच्च इनपुट, संसाधन प्रधान खेती प्रणाली के कारण बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, पानी की कमी, मृदा क्षरण और ग्रीनहाउस गैस का उच्च स्तरीय उत्सर्जन हुआ है।
- गंगा बेसिन से परे वर्षा सिंचित क्षेत्रों में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। वर्षा सिंचित क्षेत्र, सिंचाई के प्रचलित क्षेत्रों की तुलना में प्रति हेक्टेयर उर्वरकों का केवल एक-तिहाई उपयोग करते हैं।
- रसायन मुक्त कृषि के लिए आदानों का उत्पादन करने वाले सूक्ष्म उद्यमों को आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक आदानों की अनुपलब्धता की चुनौती को दूर करने के हेतु सरकार की ओर से सहायता प्रदान की जाएगी, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये इन्हें ग्राम-स्तरीय इनपुट और बिक्री की दुकानों की स्थापना के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- सरकार को एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र की सुविधा प्रदान करनी चाहिए, जिसमें किसान संक्रमण काल के समय एक-दूसरे से सीखें और एक-दूसरे का समर्थन करें।

निष्कर्ष- जैविक खेती से मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है। कार्बनिक संचलन और गंदगी की भौतिक और खनिज प्रकृति इसमें योगदान देने वाले कारक हैं। इसी कारण से अन्य तरीकों की तुलना में जैविक खेती को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

पी. आर. बेरा
वरिष्ठ महाप्रबंधक
मेकॉन लिमिटेड, भिलाई

गांधी जी का चौथा बन्दर?

सोचता हूँ कि गांधी जी ने तीन बंदरों की परिकल्पना क्यूँ की होगी? बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो। असल में ये बन्दर अच्छी समझ के प्रतीक हैं। गाँधी जी इनके माध्यम से लोगों में अच्छी आदतों के प्रति जागरूकता लाना चाहते थे। लेकिन समय बदला है, परिस्थिति बदली है। हम बुरा देखते हैं, बुरा सुनते हैं और बुरा बोलते भी हैं। इन सबकी हम को आदत सी हो गई है। ऐसे में हम अपने आपको कैसे ठीक रखें? बड़ा कठिन सवाल है। गाँधी जी होते तो वो हमें क्या सीख देते? गांधी जी अगर आज होते तो क्या वे सिर्फ़ तीन बंदरों की ही बात करते ? कदापि नहीं। शायद वो हमारी ज़िन्दगी में चौथा बंदर ला कर बैठा देते। चौथा बंदर , अजीब सा लगता है न सुनकर। वाकई , आज ज़रूरत है चौथे बंदर की , जी हाँ। चौथा बंदर। बुरा मत मानो। जब सब लोग अपनी अपनी बात बेबाक हो कर कह रहे हैं, बिना ये समझे कि की उनकी बातें दूसरों को ठेस पहुँचा सकती हैं , सामाजिक माहौल ख़राब कर सकती हैं , तब बेहतर यही होगा कि लोग बुरा न मानें और अपने कार्य / अपनी प्रतिक्रिया संपूर्ण विवेक का इस्तेमाल कर ही करें। चौथा बंदर हमको अपने अंदर सहनशीलता अपनाने की प्रेरणा देगा। सहनशीलता सद्भाव को जन्म देगी , सद्भाव शांति को और शांति प्रगति को। तब ही तो सबका साथ, सबका प्रयास , सबका विकास और सबके विश्वास की परिकल्पना साकार होगी।

चैतन्य वेंकटेश्वर
महाप्रबंधक, सेल सेट, भिलाई

'चाँदनी'

संयुक्त मारवाड़ी परिवार में आज अनोखा आनंदमय उत्सव सा विद्यमान है। ताऊजी की सबसे लाडली पूर्णिमा को देखने उन्हीं के बचपन की सहेली का परिवार आ चुका है। ताऊजी के चेहरे पर रिश्ते को लेकर असीम सुख व शांति है। लेकिन घर की महिलाएँ इतनी दूर से आए रिश्ते से बहुत ज्यादा खुश नहीं थी। माना कि ननिहाल उसी मोहल्ले का है, पर उनकी लाडली इतनी दूर जाए, ये उन्हें कुछ ठीक नहीं लग रहा था और ऊपर से सुना था कि लड़के की बहन बहुत होशियार और तेज़ है। गृह मुखिया के साथ दोनों भाई भी चुपचाप व्यवस्था देख रहे थे ।

अद्भुत वातावरण है, पूर्णिमा अपने नाम के अनुरूप शांत, सौम्य, असीम सौंदर्य की मलिका है, तो लड़का भी अपने नाम के अनुरूप शांत, सुशील और चरित्रवान है। लड़का-लड़की का देखना-दिखाना औपचारिकता मात्र है। गुण वर्गों का भी अद्भुत मिलान पहले ही हो चुका है। लड़के की बहन को लेकर हल्की सी घबराहट है, पर पूर्णिमा के चाँद से उजले मुखडे से कौन प्रभावित नहीं हो सकता, ये सोचकर ताऊजी की घबराहट जाती रही। लड़का-लड़की के बीच औपचारिक मुलाकात भी नई-नवेली भाभियों ने गुपचुप घर दिखाने के बहाने तय कर ही ली थी। सभी ओर शीतल बयार बहने ही लगी थी। एक 'हाँ' के साथ सगाई का कार्यक्रम भी दोनों ओर से मूक सहमति पाता नज़र आने ही वाला था कि, अचानक बातों ही बातों में लड़के की बहन ने कन्या पूर्णिमा को एक कमरे में ले जाकर कमरा अंदर से बंद कर लिया। जैसे चाँद काले बादलों की ओट में हो लिया हो, वैसे ही पूर्णिमा कुछ सहम सी गई।

तभी उसकी होने वाली ननद ने पूछा "आपको मेरा भाई पसंद है", उसने बहुत धीमी आवाज में 'हाँ' कहा ही था कि, ननद ने दूसरा सवाल दाग़ दिया कि 'आप ये बिना किसी दबाव के कह रहीं है, आप किसी और को तो पसन्द नहीं करती है'। 'नहीं-नहीं', पूर्णिमा ने मजबूत स्वर में कहा। फिर बहन बोली कि "आप हम सबको पसंद है, क्या हम सब भी आपको पसंद हैं।" "हॉं" विस्मित भाव से उसने कहा। "इतनी दूर जानें में आपको कोई ऐतराज़ तो नहीं है" बहन फिर बोली। नहीं, पर आप ये सब क्यों पूछ रही है, पूर्णिमा ने कुछ संकोच के साथ पूछ ही लिया।

बहन कहने लगी, "क्योंकि मैंने देखा आपका संयुक्त परिवार बहुत खूबसूरत है, परंतु हमारे एकल परिवार में आप अपनी पसंद से मुस्कुराते हुए आएँ तो हमारी खुशियाँ दुगनी हो जाएंगी। आप निश्चिंत रहें, आप मना करेंगी तो पूरा दोष मैं अपने ऊपर ले लूंगी।

पूर्णिमा ने कहा "अगर मेरी ननद ऐसी तेज़ है, तो मुझे मंजूर है" ।

पूर्णिमा का चाँद पूरे शबाब पर था, दरवाज़ा खुलते ही पूर्णिमा की चाँदनी दोनों परिवारों में फैल गई।

'मुक्ति'

मैं अपने सामर्थ्य की शक्ति से
सबको सींचती रही,
ज़िन्दगी अविश्वास की रेखाएँ
खींचती रही।
अविश्वास के दायरों में
मैं टूटकर उलझती रही,
प्रतिक्षण जन्म लेती मेरी हस्ती
प्रतिक्षण और मिटती रही।
कभी असहाय कभी लाचार, कभी आतुरता से
बहारों की उम्मीदों पर ज़िन्दगी घिसती रही।
ना मिला सुकून साँसों के थमने तक,
रुदाली भी मुझे श्मशान से खींचती रही।
उन्मुक्त होकर भी पवन में मुक्त न हुई
आत्मा भी मोक्ष द्वार पर राह तकती रही।

रश्मि अमितेष पुरोहित
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 57 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 57 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 57 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 57 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

औद्योगिक और तकनीकी विकास की मिसाल मोर भिलाई : मेरी माटी - मेरा देश

15अगस्त सन 1947 में देश की आज़ादी के बाद दुनिया के अन्य विकसित देशों की तर्ज़ में भारत में विकास की बुनियाद रखी गई। सडकों, बाँधों, इमारतों और कारखानों के निर्माण के लिए आवश्यक इस्पात का निर्माण देश में ही हो, जो कि अत्यंत आवश्यक वस्तु थी, इस दिशा में भारत सरकार ने सोवियत संघ से इस्पात निर्माण के कारखाने स्थापित करने के लिए सहयोग लिया। सोवियत संघ के साथ भारत में इस्पात कारखाना बनाने के लिए 2 फरवरी 1955 एक समझौता हुआ। समझौते के अन्तर्गत दस लाख टन इस्पात बनाने की क्षमता वाले इस्पात संयंत्र की स्थापना की जानी थी।

तत्कालीन मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ अंचल के मैदानी भाग में खनिज अयस्कों की भरपूर भंडार के स्रोत की जाँचपड़ताल के लिए सोवियत संघ के तकनीकी दलों ने दल्ली राजहरा की पहाड़ियों का सर्वे किया और पाया कि अयस्कों में लौह की प्रचुरता अधिक मात्रा में है, पानी के स्रोत के रूप में तांदुला जलाशय का चयन किया गया। चूने का पत्थर नंदिनी में मिला, साथ में कोयला भी कोरबा क्षेत्र में उपयुक्त पाया गया। कुल मिलाकर छत्तीसगढ़ को इस्पात कारखाना के लिए सर्वोत्तम उपयुक्त स्थल पाया गया। अब संयंत्र की स्थापना के लिए स्थान का चयन किया जाना था, उपयुक्त स्थान के रूप में भिलाई गाँव का चयन किया गया, क्योंकि पास से ही बम्बई कलकत्ता रेल मार्ग गुज़रती थी। इस प्रकार भिलाई गाँव जो हरे-भरे खेतों से ढँका रहता था, उसे इस्पात संयंत्र की स्थापना हेतु चयनित किया गया। भिलाई गाँव अब एक नए भारत के स्वप्न को साकार करने जा रहा था। भिलाई के हरे-भरे खेतों वाले क्षेत्र में पहली खुदाई मई 1956 में की गयी कुछ दिनों बाद बड़ी-बड़ी मशीनों के ज़रिये संयंत्र का निर्माण सोवियत तकनीकी विशेषज्ञों की देखरेख में प्रारंभ हुआ।

जनवरी 1959 में पहली कोक ओवन बैटरी आरंभ हुई। कोक निर्माण हीटिंग दीवारों के बीच कोक ओवन बैटरी में किया जाता है। वांछित यांत्रिक और थर्मो-रासायनिक गुणों के धातुकर्म कोक का उत्पादन करने के लिए उन्हें लगभग 1000-1100 डिग्री सेन्टीग्रेड के तापमान पर एक निश्चित समय तक वाष्पीकरण तक कार्बोनाइज्ड किया जाता है। कोकिंग कोल वे कोयले होते हैं, जो हवा की अनुपस्थिति में गर्म करने पर पहले पिघलते हैं, प्लास्टिक अवस्था में जाते हैं, फूलते हैं और फिर से जम कर एक ठोस सुसंगत द्रव्यमान बनाते हैं, जिसे कोक कहा जाता है।

पहली धमन भट्ठी से 4 फरवरी 1959 को पिघले लोहे के पहली खेप निकली। धमन भट्ठी एक प्रकार की धातुकर्म भट्टी है, जिसका उपयोग पिग आयरन का उत्पादन करने के लिए किया जाता है। ब्लास्ट से तात्पर्य वायुमंडलीय दबाव से अधिक दाब पर आपूर्ति की जाने वाली दहन वायु से है। धमन भट्ठी में, ईंधन (कोक), अयस्कों और फ्लक्स (चूना पत्थर) को भट्ठी के शीर्ष के माध्यम से लगातार आपूर्ति की जाती है, जबकि हवा का गर्म प्रवाह (ऑक्सीज़न के साथ) भट्ठी के निचले हिस्से से अन्दर ट्वीयर्स की मदद से किया जाता है, ताकि सामग्री के नीचे की ओर गिरने पर रासायनिक अभिक्रियाएँ पूरी भट्टी में होती रहें। अंतिम उत्पाद नीचे से निकाली गई पिघली हुई धातु और स्लैग के रूप में होते हैं और भट्टी के ऊपर से निकलने वाली अपशिष्ट गैसें (फ्लू गैस) होती हैं।

आठ महीने बाद 12 अक्टूबर 1959 को पहला द्रव इस्पात बनाया गया। ओपन हर्थ फर्नेस में स्क्रैप और तरल ब्लास्ट-फर्नेस लोहे के चार्ज को तरल स्टील में बदलने के लिए गैसीय या तरल ईंधन के दहन की गर्मी का उपयोग किया जाता है। मर्चेंट मिल में बने उत्पाद लंबे होते हैं, जिसमे मुख्यत: मजबूत जंगरोधी स्टील बार, एंगल, गोल बार, चैनल्स, बीम और विशेष प्रोफ़ाइल आदि हैं। इन लम्बे उत्पादों का उपयोग बड़ी-बड़ी भूकंप रोधी इमारतों, बांधों और सेतु निर्माण, सड़क और रेल सुरंगों के विकास के लिए किया जाता है।

इस प्रकार 22 फरवरी 1961 को दस लाख क्षमता के पहले चरण का निर्माण पूरा हो गया। 12 सितम्बर 1959 को 24 लाख क्षमता के विस्तार के लिए अनुबंध हुआ। साथ में 500 टन क्षमता की ओपन हर्थ भट्ठियां बनाई गईं तथा धमन भट्ठियों की क्षमता भी बढ़ाई गई। नए चरण में वायर रॉड मिल का निर्माण किया गया। वायर रॉड मिल का उत्पाद आमतौर पर आकार और गोलाई में छोटा होता है, 5 मिमी से 12 मिमी व्यास की स्टील वायर रॉड का उत्पादन क्वॉइल के रूप में होता है। यहाँ से उत्पादित किए जाने हेतु उपयोग में जो इस्पात लाया जाता है, उसकी गुणवत्ता निम्न कार्बन, मध्यम कार्बन, उच्च कार्बन तथा सूक्ष्म और निम्न मिश्र धातु इस्पात है।

40 लाख क्षमता के विस्तार में एल.डी. कन्वर्टर, सतत ढलाई शाला और प्लेट मिल की स्थापना हुई। बेसिक ऑक्सीजन स्टील मेकिंग जिसे ऑक्सीज़न कनवर्टर प्रक्रिया के रूप में भी जाना जाता है, इस विधि में धमन भट्ठी से प्राप्त कार्बन युक्त पिघले हुए लोहे के माध्यम से ऑक्सीजन प्रवाहित करके इस्पात बनाया जाता है। इस्पात बनाने की प्रक्रिया के अन्तर्गत चूने या डोलोमाइट के फ्लक्स, स्क्रैप, मैग्नीज़ और कोक मिलाया जाता है. जो रासायनिक क्रिया करके अशुद्धियों को हटाकर निम्न कार्बन, मध्यम कार्बन, उच्च कार्बन और सूक्ष्म-निम्न मिश्र धातु वाली इस्पात बनाता है। निरंतर ढलाई शाला में पिघली हुई इस्पात को ठोस में बदला जाता है। इस प्रक्रिया में प्रचालन लागत कम और उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी होती है। निरंतर ढलाई शाला में बनाए गए आयताकार स्लैब से सपाट चौड़े प्लेट तथा चौकोर लम्बे ब्लूम से रेल बनाई जाती है।

प्लेट मिल के उत्पादों की मोटाई 8-120 मिमी, चौड़ाई 1500-3270 मिमी और लंबाई 5-12.5 मी है। प्लेट मिल भारी और मध्यम प्लेटें, साथ ही पाइप निर्माताओं के लिए भी बनाती है। यहाँ की बनी प्लेटों से रेल के वैगन, सेतु निर्माण,अंतरिक्ष कार्यक्रमों नौ-सेना के युध्दपोत, तेल की बड़ी-बड़ी टंकियाँ और बॉयलर बनाया जाता है। भिलाई की प्लेट मिल देश की सबसे चौड़ी प्लेट मिलों में से एक है, और यह इनपुट के रूप में कंटीन्यूअस कास्ट स्लैब का उपयोग करती है।

7 एमटी आधुनिकीकरण और विस्तार कार्यक्रम में उत्पादकता, गुणवत्ता, लागत प्रतिस्पर्धात्मकता, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण संरक्षण में सुधार के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियाँ स्थापित की गई हैं। नई सुविधाएँ: (1)2.8 एमटीपीए ब्लास्ट फर्नेस 8 - महामाया नामक आधुनिक डिजाइन वाली नई ब्लास्ट फर्नेस की उपयोगी मात्रा 4060 क्यूबिक मीटर है और प्रति दिन 8030 टन गर्म धातु और प्रति वर्ष 2.8 मिलियन टन गर्म धातु का उत्पादन करने की क्षमता है। (2)4 एमटीपीए स्टील मेल्टिंग शॉप 3 - अत्याधुनिक तकनीक वाले नए और आधुनिक एसएमएस III में 3 मुख्य तकनीकी शामिल हैं -1. बेसिक ऑक्सीजन फर्नेस (बीओएफ) 2. सतत ढलाई संयंत्र 3. माध्यमिक शोधन इकाई. एसएमएस 3 में 180 टन क्षमता के तीन कन्वर्टर और 3 कास्टर कार्यरत हैं, जिनमें 2 बिलेट कास्टर और 1 ब्लूम कास्टर शामिल हैं। सेकेंडरी रिफाइनिंग इकाइयों में लैडल फर्नेस, आरएच डेगासर और आर्गन रिंसिंग स्टेशन शामिल हैं। (3) 1.2 एमटीपीए यूनिवर्सल रेल मिल -1.2 एमटीपीए यूनिवर्सल रेल मिल, जिसमें सार्वभौमिक रोलिंग, फिनिशिंग और परीक्षण के लिए अत्याधुनिक तकनीकें हैं, जो सेल को भारतीय रेलवे द्वारा 260 मीटर रेल की बढ़ती मांग को पूरा करने में मदद करेगी, साथ ही हाई-स्पीड रेल परिवहन और माल ढुलाई गलियारों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हेड-हार्डन्ड रेल के रूप में अन्य ग्रेड भी प्रदान करेगी। । (4) 0.9 एमटीपीए बार एवं रॉड मिल -बार एंड रॉड मिल उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करने के लिए सुसज्जित है, जिसमें कॉइल में वायर रॉड, कॉइल में टीएमटी रिबार, टीएमटी रिबार स्ट्रेट और 5.5 मिमी से 60 मिमी व्यास तक की सीधी लंबाई में क्वालिटी बार शामिल है।

भिलाई इस्पात संयंत्र ने छत्तीसगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक औद्योगिक और तकनीकी विकास की यात्रा की शुरुआत की थी। औद्योगिक और तकनीकी विकास का क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव शिक्षा, अर्थव्यवस्था और संस्कृति सहित विभिन्न क्षेत्रों में लगातार हर स्तर पर दिखाई दे रहा है। शिक्षा केंद्र के रूप में भिलाई की अपनी एक अलग ही पहचान है। यहाँ तकनीकी विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भी हैं। भिलाई इस्पात संयंत्र भारत देश में सर्वश्रेष्ठ एकीकृत इस्पात संयंत्र के लिए प्रधानमंत्री ट्रॉफी का ग्यारह बार का विजेता है। भिलाई एक शैक्षणिक, औद्योगिक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक और एक छोटे समृध्द भारतीय केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। दुनिया के लिए भिलाई इस्पात संयंत्र भारत और रूसी सहयोग और मैत्री की एक अमिट मिसाल है।

पी. के. ठाकुर
महाप्रबंधक
आर. डी. सी. आई. एस.

मोर गँवई गाँव

मोला अब्बड़ सुन्दर लगथे, ये पीपर के छाँव।
मोर गँवई गाँव संगी, मोर गँवई गाँव।
अइसन गँवई गाँव हा संगी, मोला गजब सुहाथे।
संझा-बिहनिया होथे त, सुन्दर हवा आथे।
चींव-चींव चिरईया मन करथे, मन मा खुशी समाथे।
हमन जाथन घूमे बार संगी, त अड़बड़ मजा आथे।
अइसन गँवई गाँव मा संगी सुख रहिथे बड़ा भारी।
शहर सही ईहाँ होवय नहीं गा बड़े-बड़े बीमारी।
गँवई गाँव मा रहिके देखव, कइसन मजा आथे।
शहर डहर मन जावै नहीं, रहासी-रहासी आथे।
धान, कोदो, राहेर, तिली, दिखथे गा मन भावन।
धरती हरियर-हरियर दिखथे, जब महिना आथे सावन।
अइसन गँवई गाँव के संगी, मरम हे गजब निराला।
तिहार-बार अऊ मेला दशहरा, नाम गिनावँव काला।
झगड़ा लड़ाई होथे त, गाँव के मन समझाथे।
सबो झन ला जोर के सही नियाँव ला बताथे।
नियालय मा जायेके जरुरत नई राहय, गाँव मा होथे नियाँव।
मोर गँवई गाँव संगी, मोर गँवई गाँव।

किसका कहाँ महत्व है ?

फलों में अंगूर का, शादी में सिंदूर का।
युद्ध में हथियार का, नाव में पतवार का।
संचार में टी.वी. का, जिन्दगी में बीवी का।
सिर में केश का, विश्व में भारत देश का।
द्रवों में पानी का, जीवन में जवानी का।
खाद्यान्न में चावल का, उद्यान में फूल का।
जंगली फलों में बेल का, सजा में जेल का।
वाहन में स्कूटर का, पक्षी में कबूतर का।
ट्रेड में गेन का, राइटिंग में पेन का।
पुराणों में गीता का, साहित्य में कविता का।
वीरों में आन का, छत्तीसगढ़ में धान का।
आभूषणों में हार का, संबंधों में प्यार का।
अपनों में साली का, जेवर में बाली का।
पकवान में लाडू का, रिश्तों में साढू का।
ईंधन में कंडे का, इलाहाबाद में पंडे का।
नक्षत्रों में केतु और राहु का, कवियों में पी. आर. साहू का।

पी. आर. साहू
वरिष्ठ सांख्यिकी कार्यालय,

यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी

भ्राता भरत और लखन, हों अर्जुन या करण।
प्रेम, प्रण, प्राण पौरष, निभाया निज धरम।
मित्र हो या सखा, सुदामा सुग्रीव सा।
केवट, शबरी अहिल्या, अयोध्या से रामेश्वरम।
भागीरथ की तपस्या, गंगा माँ की रवानी।
यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।

श्रवण भी श्याम भी, जानकी -राम भी।
संस्कृत -देवनागरी, वेदों का ज्ञान भी।
प्रभु बन सारथी, गीता भवसागर तार दी।
देवों की यह भूमि, ऋषियों का तप- ध्यान भी।
ज्योतिर्लिंग चार धाम, कैलाश पर बाबा बर्फानी।
यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।

कालखंड बदलते गए, आक्रमण से गुलामी तलक।
शक, कुषाण, तुर्क, सिकंदर, मंगोल मुगलों की सल्तनत।
तलवार चंद्रगुप्त की, चाणक्य की शिखा भी।
पृथ्वीराज की वीरता, लड़ाके महाराणा प्रतापी।
मराठों का पराक्रम, स्वराज्य शिवाजी की निशानी।
यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।

ईस्ट इंडिया कंपनी की, 1857 में जड़ें हिलाई।
जलाई पहली मशाल, क्रांति धन सिंह कोतवाल।
मंगल पांडे ने विद्रोह की, चिंगारी भड़काई।
नाना साहेब तात्या टोपे, स्वाधीनता का संग्राम।
झाँसी की वीरांगना, लक्ष्मीबाई की कुर्बानी।
यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।

मांगा खून सुभाष ने, बदले आज़ादी के।
वतन पर मिटने को उमड़े, हिंद के लाखों सेनानी।
सावरकर, पटेल, बापट, सुखदेव, खुदीराम, बिस्मिल।
अंग्रेज़ों की गुलामी की, बेड़ियाँ तोड़ डाली।
मर मिटे देश पर चंद्रशेखर, भगत सिंह जैसे बलिदानी।
यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।

आज़ाद हिंद का तिरंगा, जय जवान जय किसान।
योग- संस्कार -विज्ञान, मिशन मंगल आदित्य चंद्रयान।
अध्यात्म से अनुसंधान, सोच वसुधैव कुटुम्बकम्।
गया 370 पाक - नापाक गलवान।
घर में घुसकर किए आतंकी दफ़न।

अनेकता में एकता अपनी, तेजस और राफ़ेल तूफानी,
यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।
रिश्वतखोरी घोटालों से, दूषित मन - वातावरण,
तंत्र का मंत्र राष्ट्र समर्पण बने, विरोध उन्मूलन जनआन्दोलन बने
लालच-रहित बने चरित्र प्रबल, बढ़े साधन संसाधन सदभावना,
मेरा देश बने श्रेष्ठ, कर दीमक - दानव दहन,
भ्रष्टाचार मुक्त, स्वच्छता युक्त, बनाने की अब है ठानी,

यह पावन भारत धरा, मेरी माटी की कहानी।

राकेश श्रीवास्तव
संयुक्त महाप्रबंधक यांत्रिक,
राइट्स लिमिटेड, मध्य क्षेत्र
निरीक्षण कार्यालय, भिलाई

मेरी माटी, मेरा देश

देश की माटी को नमन है, महके जैसे यह चंदन है।
यही हमारा जीवन सुखमय, करते हम इसका वंदन हैं।
मीठी वाणी सुन्दर परिवेश, मेरी माटी, मेरा देश।
वीर शहीदों का वंदन है, हम सब करते अभिनन्दन हैं।
देश बचाया देकर जीवन, वीरों तुमको शत शत नमन है।
हो जाते नत देख गणवेश, मेरी माटी, मेरा देश।
अलग अलग संस्कृति हमारी, अलग अलग है वेश।
मिल जुल कर रहते हैं सारे, सुख-दुःख पर्व विशेष।
देता भाई चारे का संदेश, मेरी माटी, मेरा देश।
भारत मेरा सबको प्यारा, प्रीत की बहती अमृत धारा।
रखते यहाँ नहीं कोई द्वेष, है जीवन अपना सबसे न्यारा।
है निश्छल मन देता सन्देश, मेरी माटी, मेरा देश।

किशोर कुमार नशीने
सी. एम. ओ. सी. टी.,
एल. डी. सी. पी.
भिलाई इस्पात संयंत्र

जननी प्रकृति

एक छोटी सी कहानी है एक बार एक वैज्ञानिक, जिसने काफी उन्नत प्रौद्योगिकी की खोज कर ली थी, या यूँ कहें कि जिसने अपना एक अलग ही नवीन संसार रच डाला था , वह उत्तेजित हो उठा और उसने ईश्वर को चैलेंज कर डाला अर्थात चुनौती दे डाली- कि आखिर दुनिया तुम्हारी उपासना किसके लिए करें ?आखिर ऐसा क्या है, जो आज हमारी पहुँच के बाहर की वस्तु है और आखिर ऐसा क्या है जो तुम कर सकते हो और हम नहीं?

उसके इस प्रकार पुकारने पर ईश्वर भी मुस्कुराए, उसके समक्ष प्रकट हुए ईश्वर ने पूछा मेरे बच्चे इतने उद्विग्न क्यों हो? आखिर क्या चाहते हो तुम मुझसे? वैज्ञानिक ने पूर्ण अहंकार के साथ कहा - अब आप स्वयं को ईश्वर कहाना छोड़ दो, आखिर ऐसा क्या है जो तुम कर सकते हो और हम नहीं? ईश्वर ने शांत चित्त, कोमल स्वर में उत्तर दिया "मेरे बच्चे मैं किसी पर दबाव नहीं डालता कि लोग मुझे माने, लेकिन फिर भी अगर तुम कहते हो कि तुम सब कुछ निर्मित कर सकते हो तो मुझे मेरे सर्वोत्तम कृति एक मनुष्य बना कर दिखा दो"।

वैज्ञानिक ने कहा यह कौन सा मुश्किल कार्य है, मैं आपको एक मनुष्य निर्मित कर अभी दिखाता हूँ - वैज्ञानिक ने अपने प्रयोग के शुभारंभ के लिए जमीन से कुछ मिट्टी उठानी चाही, परंतु यह क्या? यहाँ तो धरती ही नदारद, उसने हवा चाही, तो हवा भी गायब और जब उसने पानी की कुछ बूँदे चाहीं, तो उसे पानी भी प्राप्त ना हो सका। वैज्ञानिक ने तनिक रुष्ट होकर ईश्वर से कहा कि, आप मेरे साथ चीटिंग कर रहे हैं, ईश्वर ने पुनः शांत भाव से कहा- "मेरे बच्चे, अगर तुम अपनी दुनियाँ बनाना चाहते हो तो जरा अपनी हवा, अपनी मिट्टी, अपना पानी भी तो बना लो, अब वैज्ञानिक हतप्रभ, वास्तव में उसने अब तक जितने भी निर्माण किए यह सब तो पदार्थ जो उपलब्ध थे उन्हीं का रूप परिवर्तन करके ही, आखिर उसने स्वयं क्या बनाया ?

वैज्ञानिक के गर्व को चकनाचूर करने के लिए यह दृष्टांत पर्याप्त था, वास्तव में मनुष्य ही ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है, क्योंकि उसके पास बुद्धि है ,वह तर्क कर सकता है, प्रश्न कर सकता है, और उन प्रश्नों के जवाब तलाशने के लिए निरंतर प्रयास भी कर सकता है, क्या आपने कभी सुना है कि,एक शेर ने बगावत कर दी कि नहीं अब मैं मांस नहीं खाऊंगा या ? किसी हाथी ने कभी यह कहा कि, बस बहुत हुआ यह पत्ते यह घास-फूस खाना अब कुछ डिलीशियस हो जाए, नहीं ना, परंतु मनुष्य, वह लगातार स्वयं में परिवर्तन करना चाहता है उन्नत, उन्नत और अधिक उन्नत होना चाहता है, लेकिन किस कीमत पर उस हवा की कीमत पर जो तुम बना नहीं सकते, उस पानी की कीमत पर जिसका तुम केवल इस्तेमाल कर सकते हो, उस धरती की कीमत पर जिसके ऊपर तुम अपने महल बना कर इतराते हो? जबकि चाहे लाखों महल खड़े कर दो धरती का एक टुकड़ा भी तुम स्वयं निर्मित नहीं कर सकते।

एक और छोटी सी कहानी है, एक माँ है और उसके कोई 100 बच्चे हैं वह अपने सभी 100 बच्चों के लिए रोज खाना बनाती हैं और सारे बच्चों की संतुष्टि लायक भोजन का निर्माण करती है, सभी बच्चों में अपनी उम्र और स्वास्थ्य के अनुरूप भोजन का वितरण आसानी से हो जाता है, परंतु एक बार कुछ बड़े और बलशाली बच्चे उस वितरित भोजन का कुछ हिस्सा अपने पास रख लेते हैं कि आगे पता नहीं कब मिले या ना मिले, तो इस कार्य के कारण जो कमजोर और छोटे बच्चे हैं उन तक भोजन नहीं पहुँच पाता और धीरे-धीरे कमजोर बच्चे और कमजोर होते जाते हैं और बलशाली बच्चे और अधिक बलशाली बल्कि अतिरिक्त बचा हुआ भोजन भी इस्तेमाल ना होने के कारण सड़ने लगता है। कुछ यही कहानी है हम धरती वासियों की भी ,जिनके पास संसाधन है वह इन संसाधनों का दुरुपयोग करते हैं और उसे व्यर्थ करते हैं और जिनके पास संसाधन नहीं हैं, बूँद-बूँद के लिए तरसते हैं।

एक उच्च कोटि के फ्लैट में रहने वाले व्यक्ति घंटों बाथटब में डूबकर गैलनों पानी केवल अपने सुख के लिए बहा देता है, और दूसरी ओर वही उसके बगल में पानी की एक बूँद के लिए लोग मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं मीलों तक पैदल एक मटकी पानी के लिए भटकते जाते हैं.

वास्तव में प्रकृति जब किसी को इस दुनियाँ में आने का अवसर देती है, तो उसके लिए भोजन की व्यवस्था भी पहले ही कर देती है, बच्चे के जन्म के साथ ही माँ के आँचल को दूध की धारा से सराबोर कर देने वाली प्रकृति क्या अपने बच्चों को भूखा रखेगी? नहीं कदापि नहीं, परंतु यह विषमता यह खाई असमान वितरण का ही परिणाम है।

प्रकृति का हर कण, चाहे वह जीवित हो या निर्जीव चाहे वह सूक्ष्मजीव हो, या कोई विशालकाय जानवर, हर कोई महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए जब आप कोई खेल खेलते हैं मान लीजिए अपने चेस यानी शतरंज खेला, इसमें सबसे ज़रूरी है राजा और सबसे मामूली है प्यादा, अगर मैं आपके प्यादे को किसी अन्य शक्तिशाली मोहरे से बदल दूँ, तो क्या आप का खेल सही तरह से हो पाएगा, नहीं ना, यहाँ हर खिलाड़ी और हर मोहरे की अपनी अहमियत है और वैसे ही प्रकृति के हर तत्व की अपनी जगह बराबर की अहमियत है।

एक राजा था उसने देखा कि, चिड़िया उसके खेतों का काफी सारा अनाज खा लेती है या बर्बाद कर देती है, तो उसने आदेश निकलवा दिया कि राज्य की सारी चिड़ियों को मार डाला जाए, जो चिड़ियों को मारे उन्हें इनाम प्रदान किया जाए, बस क्या था, देखते ही देखते राज्य में चिड़ियों का अकाल पड़ गया परंतु क्या अनाज बचा? चिड़िया तो अनाज के साथ-साथ कीड़े-मकोड़ों को भी खाती थी, अब उन कीड़ों-मकोड़ों का प्रकोप दिनों दिन बढ़ता गया क्योंकि उन्हें मारने वाला कोई न था तो उनकी ग्रोथ यानी पैदावार भी निरंतर बढ़ती गई। उसने न केवल सारे अनाज को चौपट कर डाला बल्कि अनेकानेक बीमारियों को भी न्यौता दे डाला, अंततः राजा को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने चिड़ियों को अपने पड़ोसी राज्य से आयात करवाया।

तो यह है पारिस्थितिक संतुलन, प्रकृति का हर कण, हर जीव, प्रकृति के चक्र को सुचारू रूप से चलाने हेतु अनिवार्य है इस में छेड़छाड़ कर ही मनुष्य इस संतुलन को बिगाड़ता है, परंतु प्रकृति तो फिर प्रकृति है, मनुष्य सोचता है बाढ़, भूकंप, अतिवृष्टि आदि प्रकृति का तांडव है, वास्तव में ये प्रकृति के अपने तरीके हैं, सफाई के, तुमने नदियों के प्राकृतिक बहाव को रोका, तुमने जंगलों से दोस्ती तोड़ दी, तुमने निरंतर धरती के गर्भ में खनन किया, अब प्रकृति को भी अपनी सफाई करनी है और यह भी सच है कि प्रकृति पालनहार तो है ही, लेकिन जब अपने बच्चों के लालच को नियंत्रण में लाने के लिए वह अपना डंडा चलाती है तो इंसान उठता नहीं, उठ जाता है। जो स्वाभाविक है, वह प्राकृतिक है,और जो प्राकृतिक है वहीं सहज है परंतु आज की तिथि मे सहज रहना ही सर्वाधिक दुर्लभ होता जा रहा है।

धरती का बुखार निरंतर बढ़ रहा है, उसकी सेहत का ध्यान दो, हे मनुष्य, हे बुद्धि श्रेष्ठ, अपने लालच से उबरो। प्रकृति हर किसी का पालन पोषण कर सकती है, परंतु लालच, उसका न तो कोई अंत है न कोई उपाय।

दूर तक फैला आकाश, वह हरीतिमा, वह उजास
क्षितिज के पास मुस्कुराता मंजर,
चिड़ियों का कलरव, पत्तों का सर-सर।
कल-कल करती बहती नदी,
झर-झर बहते झरने का पानी।
कौन कर रहा है इसे बदरंग,
किसने घोंपा है, इसकी छाती पर खंजर।
इसकी यह रौनक लौटा दो,
इसे प्यार से तुम सहला दो।
वरना यह दिखा देगी, तुम्हें तुम्हारी औकात,
फिर रह जाएगा, यह गर्वोन्मत्त,
खाली हाथ, खाली हाथ, खाली हाथ।

प्रथम प्रवेश

प्रथम आगमन उस नन्हे का,
कुछ कातर, कुछ उत्साहित,
कुछ सशंकित सा मन।
कितना मुश्किल था, छोड़ना माँ का आँचल,
पिता की उंगली कस कर थामे,
क्यों आना है, मुझे यहाँ पर।
शिक्षा के प्रथम सोपान पर,
क्यों छोड़ूँ मैं पिता का साया।
क्यों छोड़ूँ मैं माँ का आँचल।
पर मिलेगा यहाँ भी तुम्हें वो प्यार,
छोटे से अनगढ़ मिट्टी के टुकड़े को,
खूबसूरत आकार देने वाले हाथ।
वह ममता का स्पर्श, वह पिता का प्यार,
मत हो चिंतित मेरे नन्हे,
यह प्रथम प्रवेश खोल देगा,
जीवन में अवसरों के अनेक द्वार।

रागिनी गुरव
प्राथमिक शिक्षिका,
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

एक पेड़ लगा

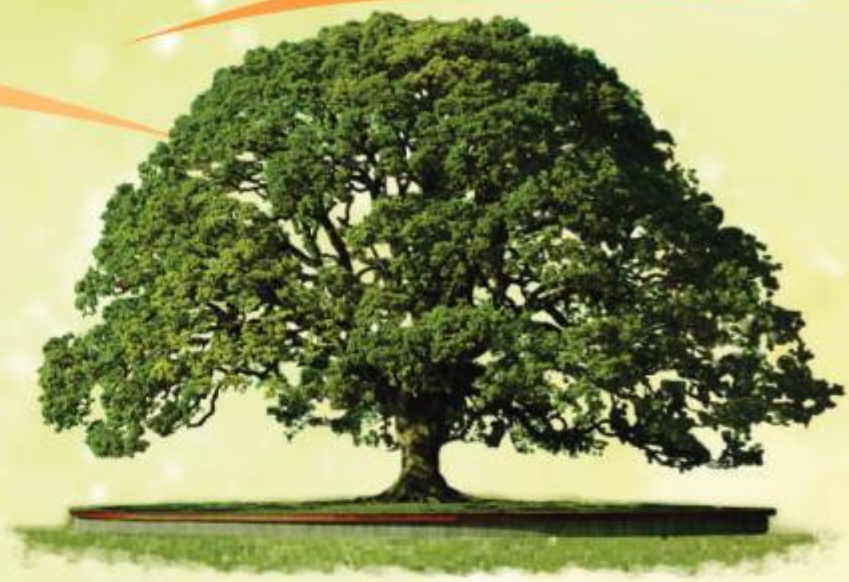

चीख चीख कर कह रहा था, पत्रकार।
देखो प्रकृति का तांडव,
यह प्रकृति का महाकाल,
रौद्र रूप, विनाशक काल!
लील लिए, प्रकृति ने हजारों प्राण।
बना बैठी अनेक मासूमों को काल का ग्रास।
यह जल प्रलय, यह बाढ़ का रौद्र रूप;
मरता मानव, बिलखते जन।
क्यों हो गई प्रकृति इतनी निष्ठुर?
मुस्कुराई प्रकृति... रे मानव...!
क्या माता कभी अपने पुत्रों की जान लेगी?
वह तो हर पल उसे अपने आँचल की छाँव देगी।
मेरा यह तांडव सिर्फ आईना है, जो दिखा रहा है तेरी लालसा का विकराल रूप।
मेरी नदियों ने तो उत्तुग बहाव माँगा,
तूने उसके पाट बाँधे,
जहाँ बहना था उन्हें अनवरत, वहाँ तूने अट्टालिकाओं के वैभव टांगे।
अपने लालच में तूने ना जाने कितने वृक्ष काटे।
रेत सीमेंट के विशाल भवनों के वैभव पाले? सहनशीलता की भी एक सीमा थी नादान।
मैं भला क्यों लेने लगी लोगों के प्राण।
मैंने तो केवल अपनी राह को किया आसान, इसमें तेरी लालच की बाधाओं को हटाना था बस मेरा काम।
अब जल प्रलय ना आए तो क्या हो?
ना दिखाऊँ अपना रौद्र रूप तो क्या हो?
अब भी समय है, मानव तेरी हर इच्छा की पूर्ति के लिए तेरी यह माँ हर समय साथ है,
पर तूने जो लालच से जीभ लपलपाई तो तांडव का डंडा बरसाने वाली भी यही प्रकृति माँ है।
बालक तो हर वक्त मांगता है माँ से मिठाई, पर उसके उपचार के लिए माँ देती है उसे कड़वी दवाई।
यह जलप्रलय यह बाढ़, यह सूखा, यह प्रकृति की मार, सब मेरे सफाई के बहाने हैं।
मुझे भी तेरे लालच के यह कचरे हटाने हैं।
जो तू खुद ना चेता, तो सबक तुझे सिखाने हैं,
चल उठ अब चेत जा, प्रकृति के साथ कदम ताल करके दिखा।
एक पेड़ लगा और उसकी छाँह में मुस्कुरा।
एक पेड़ लगा और उस से प्राण वायु पा।
एक पेड़ लगा और महाप्रलय से बचता जा।
एक पेड़ लगा, एक पेड़ लगा, एक पेड़ लगा।

रागिनी गुरव
प्राथमिक शिक्षिका,
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

मेरी भाषा क्या है?

घर में मैं बोलता हूँ अपनी ज़ुबान।
जो जी में आता है बेफ़िक्री से करता हूँ बयान।
जब आता हूँ पाठशाला में, तो आते ही करता हूँ सामना एक अजनबी भाषा का,
जिसे सब कहते हैं, विद्वत्ता की पहचान।
मैं न चाहते हुए भी उस अजनबी से परिचय बढ़ाता हूँ।
कहते हैं, वो वैश्विक भाषा है, उसकी जानकारी के बगैर हम नहीं बन पाएंगे महान।
ये कैसी है विवशता कि, अपनी भाषा मे सहज होते हुए भी मुझे ज्ञानार्जन हेतु ताकना होता है, एक अजनबी की ओर।
और तो और माता - पिता भी मेरी ग़लत अंग्रेज़ी पे सीना ताने खड़े हो जाते हैं, पर जब मैं शुद्ध हिंदी में अपनी बात कहता हूँ, तो ये तो सामान्य है कह कर आगे बढ़ जाते हैं।
जब मैं गणित के सवाल करता हूँ, तो असहज होता हूँ। प्रश्नों की मार से पर जब वही सवाल आते हैं, मेरी भाषा में तो स्वतः ही कर जाता हूँ।
पर फिर भी हर पल एक हीन भावना से भरा रहता हूँ,
क्योंकि उस अंग्रेज़ी से वो क्या कहते हैं, कंफर्टेबल नहीं हो पाता हूँ।
मुझे उस अंग्रेजी से नफरत नहीं लेकिन जिसमे मैं सहज हूँ, उसमे ज्ञान प्राप्त करने हेतु क्यों रोड़ा लगाते हो?
क्यों ज्ञानअर्जन को एक भाषा के बोझ तले दबाते हो?
ऐसे तो मैं कल को न हिन्दी का रह जाऊंगा, न अंग्रेजी में ही खिलखिलाऊंगा।
फिर न कहना, ये आज कल की पीढ़ी को तो कुछ नहीं आता है।
मुझे प्राप्त करने दो ज्ञान जिसमें मैं पाना चाहता हूँ, फिर मैं वैश्विक भाषा को भी सहज ही स्वीकार कर लूंगा, लेकिन मेरी मासूमियत को एक अजनबी का बंधक न बनाओ।
मेरी कल्पना के विस्तार को तुम न दबाओ।
मेरी विनती को करो स्वीकार, हे देश के कर्णधार। मेरा तुमसे है यही सवाल,
क्या है मेरी भाषा मुझे बताओ, क्या है मेरी भाषा मुझे बताओ।

रागिनी गुरव
प्राथमिक शिक्षिका,
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

हिंदुस्तान हमारा है।

जिस धरती पर जन्मे हम, वो देश सभी से न्यारा है।
विश्व पटल पर सबसे सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है।।

उत्तर में गिरिराज हिमालय, रजत मुकुट कहलाता है।
दक्षिण माँ के चरण पखारे, हिंद-सिंधु लहराता है।
कालिंदी कृष्णा कावेरी, रेवा सुरसरि धारा है।।
विश्व पटल पर सबसे सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है।।

शस्य-श्यामला वसुंधरा है, नदी खेत-खलिहान हैं।
लगन-परिश्रम से सेवारत, धरतीपुत्र किसान हैं।।
सर्वप्रथम उगते इस धरती, सूर्य-चंद्र-ध्रुवतारा है।
विश्व पटल पर सबसे सुंदर, हिन्दुस्तान हमारा है।।

देवलोक तज देव यहाँ पर, क्रीड़ा को ललचाते हैं।
ले अवतार भिन्न रूपों में, पुण्य धरा पर आते हैं।।
मिट्टी खाकर कान्हा जी ने भू का भाग्य सँवारा है।
विश्व पटल पर सबसे सुंदर, हिन्दुस्तान हमारा है।।

वेदों उपनिषदों की शिक्षा, गीता अनुपम थाती है।
राम-कृष्ण की पावन गाथा, रग-रग में लहराती है।।
प्रेम दया सहयोग अहिंसा, सत्य सनातन नारा है।
विश्व पटल पर सबसे सुंदर, हिन्दुस्तान हमारा है।।

पुनः विश्व गुरु के सिंहासन, पर इनको पहुँचाएंगे।
सोने की चिड़िया वाला वह, मान पुनः दिलवाएंगे।।
आज़ादी अक्षुण्ण बनाने, वीर अनगिनत वारा है।
विश्व पटल पर सबसे सुंदर, हिन्दुस्तान हमारा है।।

भागवत राम निषाद
मास्टर ऑपरेटर
फाउण्ड्री एवं पैटर्न शॉप
भिलाई इस्पात संयंत्र

'जुनून'

लालाजी की दुकान पर रोज़ की तरह ही गहमा-गहमी थी। गरमा-गरम पोहे, जलेबी, समोसे और लाल पेड़े की सुगंध चारों ओर फैली हुई थी। सभी प्रकार के लोग नाश्ता करने आते और लालाजी सभी को ध्यानपूर्वक सुनते भी थे। 'देखो सरकार ने पेट्रोल के दाम फिर बढ़ा दिए' - ऑटो वाले ने चिंता ज़ाहिर की। 'अब क्या करें, महंगाई तो सर उठा के नाच रही है' - किराने की पर्ची पकड़े मध्यमवर्गीय बाबू बोल उठा। 'अपना पैसा कहाँ रखें, अब तो बैंकों की ब्याज दरें भी घटती जा रही है' - बुजुर्ग पेंशनर ने भी चिंता जाहिर की। 'सरकार न वेकैंसी निकालती है ना रोज़गार देती है' - एक बेरोज़गार भी लगभग रो पड़ा। 'भ्रष्टाचारी देश है, मेरा वीज़ा फायनल हो जाए तो दूसरे देश चला जाऊँ' - एक सुसज्जित नवयुवक ने अपनी इच्छा ज़ाहिर की। 'ना कोई सुख, ना सुविधा, गरीबों का तो अब भगवान भी नहीं रहा'- एक गरीब कामगार भी बोला।

जितने मुँह उतनी शिकायतें, सभी को देश की व्यवस्था और सरकार से शिकायतें थी। अवसरवादी राजनीति और भ्रष्टाचार पर आए दिन नित-नई घटनाओं की चर्चा का केन्द्र लालाजी की दुकान ही थी। लालाजी पिछले छः दशकों से दुकान के इर्द-गिर्द अपना जीवन चला रहे थे।

तभी ऑटो में एक बुजुर्ग महिला अपने पोते के साथ उन तक आई। लालाजी ने अपने गल्ले से उठ कर उनका अभिवादन किया। उनका सर श्रद्धा से नतमस्तक हो गया।

'प्रणाम भाभीजी...!' 'पेड़े और जलेबी बांध दो भैया'

ओह.. यह क्या, वर्दी पहने 8 साल के मासूम पर उनकी नज़र पड़ी। स्कूल में फैंसी ड्रेस था भैया, अपने बाबा और पापा की तरह वही सेना में जाने का जुनून, आज इसने मेजर का रोल किया। पहला पुरस्कार भी मिला, सोचा, घर मिठाई लेती चलूँ।

रामगोपाल लालाजी का बचपन का सहपाठी था। उनका बेटा मनोहर भी वैसा ही था- जुनूनी.... लालाजी ने दोनों के देश सेवा के जुनून को अपनी आँखों से देखा और उनकी शहादत को भी।

अब यह छोटा एकमात्र सहारा, कृष्णा भी उसी जुनून को जी रहा है।

शत्-शत् नमन है ऐसे परिवार को। इन्हें देश से शिकायत तो होगी पर देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का जुनून भी ज़िंदा है।

अमितेष पुरोहित
टेक्नीशियन, कार्मिक एवं प्रशासन विभाग
सेल रिफ्रेक्ट्री यूनिट, भिलाई

वित्त विभाग और मैं

मैं बी.एस.पी के ट्रैफिक विभाग में पल रहा था।
और मेरा जीवन भी भली भाँति चल रहा था।।

कुछ साल पहले प्रबंधन का एक प्रस्ताव मुझे भा गया।
और मैं हँसते-खेलते वित्त एवं लेखा विभाग में आ गया।।

सोचा था शिफ्ट रिपोर्टिंग से मुक्ति मिलेगी।
नौ से साढ़े पाँच की नौकरी बिंदास चलेगी।।

इस्पात भवन में अपना भी एक ठिकाना होगा।
आई.सी.एच. की कॉफी और लजीज़ खाना होगा।।

पर जब से आया हूँ, पल-पल फिसल रहा हूँ।
बड़ी मुश्किल से गिर-गिर कर सँभल रहा हूँ।।

काम है कि, कभी रोज़ का पूरा नहीं होता है।
बॉस का गुस्सा कभी अधूरा नहीं होता है।।

एक तिमाही जाती नहीं, दूसरी का लेखा आ जाता है।
बचा हुआ दिमाग ऑडिटर और विजिलेंस चबा जाता है।।

एक्सेल और सैप के सागर में डूब गया हूँ।
सच कहूँ इस कंप्यूटर से अब मैं ऊब गया हूँ।।

डेबिट और क्रेडिट के दलदल में धँस गया हूँ।
लगता है अभिमन्यु के चक्रव्यूह में फँस गया हूँ।।

विनती है, मुझे इस भँवर में आप सँभाल लेना।
अपना समझ कर इस मँझधार से निकाल लेना।।

अविलाष प्रसाद पंसारी
सहायक महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

सब कहते हैं !

सब कहते हैं
अपनी नकारात्मकता खत्म कर दो!
मुझे कीचड़ में खिला कमल याद आया।
कीचड़ किसी के लिए व्याकुल हो सकता है?
कमल तो खिलता ही इसलिए है,
उसे कीचड़ पसंद है!

सब कहते हैं
अपनी भावुकता खत्म कर दो!
किसी ने दिल तोड़ा तो बिखर गईं मेरी भावनाएँ!
फिर आहत भावनाएँ लिए,
हम दुनियां में सबसे तेज़ भागे!
इतना तेज़, सबको छोड़ते कि सबसे आगे निकल गए।

सब कहते हैं
अपना दुःख खत्म कर दो!
दुःख का उपहास किसी ने उड़ाया तो हमें
सुख के अर्थ समझ में आए!
हमने फिर,
दुनिया के सारे सुख हासिल किए!

सब कहते हैं
भविष्य के बारे में नहीं सोचते तुम!
मैंने सोचा भविष्य के बारे में,
मृत्यु खड़ी थी बाँहें फैलाए!
जो जितना तेज़ दौड़ा वह उतनी जल्दी पहुँचा,
जो जितना ऊपर उठा, वह उतने भार से गिरा!

जब भविष्य मृत्यु है,
अटल है,
तो क्या पाने के लिए दौड़ें?
जब सब रह जाता!
कुछ साथ नहीं जाता!

राजू कुमार शाह
मास्टर ऑपरेटर
सी. ओ. सी. सी. डी.,
भिलाई इस्पात संयंत्र

हिंदी के वैश्विक भाषा की ओर बढ़ते कदम

भाषा मानव विकास का एक जीवंत प्रमाण है। मानव के विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास हुआ। सांकेतिक से मौखिक, तत्पश्चात् लिखित भाषा का विकास हुआ। भाषा के बिना मानव समाज मूक प्राणी के सामान है। विश्व में लगभग 7000 भाषाएँ है, जिनमें हिंदी तीसरी सबसे अधिक बोली जानी वाली भाषा है। मूल भाषा संस्कृत से हिंदी भाषा का प्रादुर्भाव लगभग 1000 वर्ष पूर्व हुआ ऐसा माना जाता है, तब से ही हिंदी में क्रमिक विकास जारी है, हिंदी की लिपि देवनागरी है।

वैज्ञानिकता व सहजता - हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, इसका साहित्य व शब्दकोश अत्यंत सरल तथा विशाल है। ये जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है। इसके उच्चारण व लिखावट में जितनी समानता है उतनी किसी अन्य भाषा में नहीं है। एक जीवंत भाषा है इसमें प्रत्येक विषय-वस्तु को प्रकट करने के लिए शब्दों का भंडार है, भाषा केवल संचार का माध्यम ही नहीं है, अपितु ये लोगों की संस्कृति, इतिहास व विकास का प्रतीक है। हिंदी, अपनी समृद्ध ऐतिहासिक वंशावली और समकालीन प्रासंगिकता के साथ, भारत के विकास की यात्रा तथा इसकी वैश्विक आकांक्षाओं को समाहित करती है। ये आम जन-मानस की भाषा है इसीलिए हिंदी के बारे में ये कहा गया है,

निज भाषा, निज का सम्मान, इससे बनता देश महान है।
हिंद देश के वासी का हिंदी के बिन सूना ज्ञान है।।

हिंदी का विदेश में बढ़ता प्रभाव- हिंदी विश्व की प्रमुख भाषा के साथ-साथ भारत की राजभाषा भी है संयुक्त राष्ट्र की संस्था 'यूनेस्को' द्वारा वर्ष 1955 में हिंदी को मान्यता प्रदान की गई थी। हिंदी भाषा यूनेस्को में संचार का अभिन्न अंग है तथा इसे यूनेस्को में एक आधिकारिक भाषा का स्थान भी प्राप्त है। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पहचान वर्ष 1977 में श्री अटल बिहारी वाजपेई जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ मे दिए गए हिंदी में भाषण से मिली। हिंदी में ये भाषण ऐतिहासिक था। क्योंकि, इससे पहले संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत सरकार के द्वारा नामित किसी भी प्रतिनिधि द्वारा हिंदी में दिया गया प्रथम भाषण था। इससे पूर्व अंग्रेजी भाषा में ही भाषण देने की प्रथा रही। यह पहली बार था जब किसी भारतीय द्वारा हिंदी में भाषण

दिया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया और यह क्रम अभी भी जारी है। 10 जून 2022 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने भारत द्वारा सुझाए गए बहुभाषा के प्रस्ताव को स्वीकार किया।

हिंदी व इसकी हिंदी मिश्रित बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के अधिकांश राज्यों में बोली जाती हैं। भारत के अलावा अन्य देशों में भी लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं उदाहरण स्वरूप नेपाल, मॉरिशस, गुयाना, फ़िजी, सूरिनाम, तथा संयुक्त अरब अमीरात। फरवरी 2019 में अबू धाबी के न्यायालय में हिन्दी को तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली है। विश्व में सर्वाधिक बोली (मातृभाषियों) जाने वाली भाषाओं में हिंदी को तीसरा स्थान दिया प्राप्त है। मातृभाषियों की संख्या के आधार पर से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिंदी का दूसरा स्थान है। परतु हिंदी प्रयोग करने वालों का क्षेत्र चीनी भाषियों की संख्या में अधिक है। विगत दो दशकों में हिंदी का अन्तरराष्ट्रीय विकास बहुत तेज़ी से हुआ है। वर्तमान मे विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी का पढ़न-पाठन तथा शोध कार्य हो रहा है। हिंदी प्रचार के लिए विदेशों में संस्थाओं का निर्माण किया गया है। लगभग 25 पत्र-पत्रिकाओं का विदेशों में हिंदी में प्रकाशन हो रहा है। विदेशो में हिंदी भाषा में फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है और अंग्रेजी फिल्मों का हिंदी भाषा में रूपांतर भी हो रहा है। हिंदी पत्रिकाएँ प्रकाशित भी हो रही हैं, जिनमें विश्वा (अमेरिका), पुरवाई (इंग्लैंड), हिंदी चेतना (कनाडा), अभिव्यक्ति-अनुभूति (शारज़ाह), साहित्य कुंज (कनाडा) इत्यादि प्रमुख है। ब्रिटेन में, प्रवासी भारतीयों ने हिंदी के प्रचार- प्रसार में विशेष योगदान दिया है। ब्रिटेन में यूके हिंदी नामक संस्था हिंदी सिखाने का कार्य कर रही है।

भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था और उपभोक्ता की संख्या में वृद्धि के कारण विश्व की बड़ी-बड़ी कंपनियाँ भारत को एक अवसर के रूप में देख रही है। इस कारण वे अपने कॉल सेंटर, निर्माण इकाइयों मे हिंदी भाषी कर्मचारियों को रोज़गार दे रही हैं और विदेशी कर्मचारियों को रोज़गार दे रही हैं और विदेशी कर्मचारियों को हिंदी भाषा सिखा रही हैं, जो हिंदी के प्रसार में सहायक है। विदेश में रह रहे प्रवासी भारतीयों का हिंदी के प्रचार में विशेष योगदान है, जो विश्व के हर कोने में अपने संस्कृति व अपनी योग्यता के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय सिनेमा के संगीत व फिल्मों ने देश मे ही नही अपितु विदेशों मे भी हिंदी के प्रचार -प्रसार मे विशेष योगदान दिया है। हिंदी के महत्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था -

"भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिंदी महानदी।"

चुनौतियाँ - हिंदी का प्रचार-प्रसार देश-विदेश में जिस गति से होना चाहिए था उस लक्ष्य को हम अभी तक प्राप्त नहीं कर पाए हैं। हिंदी को भाषा के रूप में जिस तरह का सम्मान देश के अंदर होना चाहिए था, वह अभी तक हिंदी को प्राप्त नहीं हुआ है। आज भी भारत के कुछ राज्यों में हिंदी के प्रति रूचि नहीं है। हिंदी-भाषी राज्यों ने द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी की बजाय अंग्रेज़ी पर ज़्यादा ज़ोर दिया। आज भी बहुत से सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के प्रति उदासीनता है। निजी क्षेत्र के कार्यालयों, बैंकों व सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित कंपनियों में आज भी हिंदी के बजाय अंग्रेज़ी में कार्य पर किया जाता है। भारतीय समाज में अंग्रेजी को हिंदी से ज्यादा महत्व देना तथा अंग्रेजी भाषी व्यक्ति को ज्ञानी समझना इत्यादि प्रचलन हिंदी के प्रसार में प्रमुख चुनौतीयाँ हैं। समाज में अंग्रेज़ी के प्रति मोह तथा हिंदी के प्रति जो हीन भावना है, उस पर भारतेन्दु जी की निम्नलिखित पंक्तियाँ भारतीय समाज को एक सन्देश देती है -

अँगेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन,
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

निष्कर्ष – हिंदी अपने ही देश में उपेक्षा का शिकार हो रही है, आज की युवा पड़ी हिंदी भाषा के लेखन व बोलने से परहेज़ कर रहा है। अभिभावक अपने बच्चों को हिंदी के अपेक्षा दूसरी भाषा को सीखने पर जोर दे रहे हैं। किसी भाषा को वैश्विक भाषा बनने के लिए अपने मूलभूत स्थान पर सुदृढ़ होना अति आवश्यक है। अपितु भारत सरकार ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया है और ये सतत जारी है। जनमानस के कार्यों में हिंदी के प्रयोग पर ज़ोर देना चाहिए। देश के प्रत्येक नागरिक को समझना होगा कि, हिंदी हमारे इतिहास व स्वतंत्रता का मूल रही है। इसके व्याकरण व

शब्दकोश मे जो वैज्ञानिकता है, वो किसी अन्य भाषा मे नहीं है। आज कई ऐसे विकसित देश हैं, जहाँ पर कामकाज व शिक्षण का कार्य देशज भाषा में ही होता है। देशज भाषा में ग्रहण की गयी शिक्षा प्रभावी होती है। अतः समाज के विकास के लिए हिंदी आवश्यक है तथा इससे हिंदी प्रसार होगा और ये एक वैश्विक भाषा बन सकती है। भारतेन्दु जी ने हिंदी की प्रासंगिकता को देखते हुए जो कहा है वो पूर्णतः सत्य है ।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

स्रोत:- ऑनलाइन समाचार पत्रों व पत्रिकाओं से, विभिन्न ऑनलाइन लेखन से, राजभाषा विभाग

रीतेश राय
रसायनज्ञ
विशिष्ट परीक्षण प्रयोगशाला
पावरग्रिड, कुम्हारी, दुर्ग

सुखी जीवन की राह

एक राजा हमेशा तनाव में रहता था। एक दिन उनसे मिलने एक विचारक आया। उसने राजा से उसकी परेशानी पूछी तो वह बोला - मैं एक सफल राजा बनना चाहता हूँ, जिसे प्रजा का हर व्यक्ति पसंद करे। मैंने अब तक अनेक सफल राजाओं के विषय में पढ़ा है और उनकी नीतियों का अनुसरण किया है। परंतु मुझे वैसी सफलता नहीं मिली। लाख प्रयासों के बावजूद मैं एक अच्छा राजा नहीं बन पाया हूँ।

राजा की बात सुनकर विचारक ने कहा जब भी कोई व्यक्ति अपनी प्रकृति के विपरीत कार्य करता है तो यही होता है। राजा ने हैरानी जताते हुए कहा - मैंने अपनी प्रकृति के विपरीत क्या काम किया? विचारक ने कहा, तुम्हें बाकी लोगों पर हुक्म चलाने का अधिकार प्रकृति से प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए जब तुम बाकी लोगों की तरह साधारण जीवन बिताओगे, तभी तुम्हें आनंद प्राप्त होगा।

जिस प्रकार जंगल में रहने वाले शेर की खाल कीमती होने के कारण शेर की जान खतरे में होती है, इस वजह से वह रात में शिकार पर निकलता है, इस भय से कि कोई कहीं उसकी खाल के कारण उसे मार ही न डाले। शेर तो अपनी खाल नहीं त्याग सकता परंतु तुम अपनी सफलता के लिए स्वयं को राजा मानना छोड़ सकते हो। जब तक स्वयं को राजा मानते रहोगे, दुख ही पाओगे। राजा को विचारक की बात जँच गई उस दिन से वह सुखी हो गया।

दरअसल अपेक्षा दुख का कारण है। इसलिए किसी से अपेक्षा न रखें और अपना कर्म करते हुए सहज जीवन जिए तो निर्मल आनंद की अनुभूति सुलभ हो जाती है।

विजय सिंह ठाकुर
टेक्नीशियन
डिस्पैच विभाग
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

गाजा पट्टी : एक खुली जेल

भूमध्यसागर के पूर्वी तट पर स्थित, लगभग दस किलोमीटर चौड़ी और पैंतालीस किलोमीटर लम्बी भूमि कीएक पट्टी है, नाम है गाजा पट्टी। यह भूमि दो तरफ से इज़राइल से घिरी है। इसके पश्चिम में भूमध्यसागर स्थित है और दक्षिण में मिश्र है। पिछले कुछ सप्ताह से, गाजा की सड़कों पर इज़राइल की सेना एवं हमास के लड़ाकों के बीच भंयकर युद्द चल रहा है। इज़राइल द्वारा की गई बमबारी में हजारों नागरिकों की जान चली गई। आम जनता रोटी और पानी के लिए दर-दर भटक रही है। बिजली और पानी काट दी गई है। घायलों का समुचित इलाज नहीं हो पा रहा है, क्योंकि अस्पताल भी ध्वस्त हो गए है।

सबसे अधिक असर यहाँ के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर हुआ है। यहाँ की आधी आबादी 18 वर्ष के कम उम्र के लोगों की है। 'सेव द चिल्ड्रन' के सर्वेक्षण के मुताबिक गाजा में रहने वाले 5 में से 4 बच्चे चिंता एवं अवसाद के शिकार है एवं उन्हें आत्महत्या करने का ख़याल आता है। इसके पूर्व हमास ने गाजा से सटे हुए इज़राइल के इलाकों पर हमला करके लोगों की निर्मम हत्या की और सैकड़ो पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों को अगवा कर लिया। इसके बाद इज़राइल ने जवाबी कार्रवाई में हमास को ख़त्म करने तक युद्ध की घोषणा कर दी है।

इज़राइल - फिलिस्तीन संघर्ष

फिलिस्तीन पर पहले ऑटोमन साम्राज्य का शासन था। प्रथम विश्वयुद्ध में ऑटोमन साम्राज्य के पतन के बाद यह क्षेत्र ग्रेट-ब्रिटेन के अधीन आ गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजियों द्वारा यहूदियों का नरसंहार किया गया। जर्मनी तथा पुरे यूरोप में अनेक यातना शिविर बनाये गए थे, जिनमें यहूदियों को कष्टकारी मौत दी जाती थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यहूदियों के लिए स्वतंत्र मातृभूमि की मांग की जाने लगी।

1947 ई० में संयुक्त राष्ट्र संघ में एक प्रस्ताव पारित हुआ, जिसके अनुसार फिलिस्तीनी क्षेत्र को तीन भाग में विभक्त करने का प्रस्ताव था :

- **यहूदियों का राज्य - इसका नाम इज़राइल था, जो 1948 में अस्तित्व में आया।**
- **अरबों का राज्य - मुख्यतः वेस्ट बैंक का क्षेत्र।**
- **यरुशलम - यह क्षेत्र संयुक्त राष्ट्र संघ के अधीन रखा गया। यह क्षेत्र दोनों यहूदियों एवं अरबों (मुसलमानों) के लिये अत्यंत पवित्र है।**

तभी से इज़राइल और फिलिस्तीन के बीच संघर्ष जारी है। इज़राइल को अमेरिका एवं पश्चिमी देशों का सहयोग प्राप्त है एवं फिलिस्तीन को अरब देशों का समर्थन है। इज़राइल देश के गठन के समय गाजा मिश्र का अंग था। परन्तु इज़राइल ने 1967 में युद्ध के द्वारा इस भू-भाग पर कब्ज़ा कर लिया। 1994 में हुए ओसलों समझौते के तहत, गाजा का नियंत्रण फिलिस्तीन मुक्ति संगठन (पीएलओ) को दिया गया, परन्तु अभी भी इज़राइल की सैनिक नाकेबंदी इस क्षेत्र में मौजूद है।

भारत का रुख

ऐतिहासिक रूप से भारत फिलिस्तीन का समर्थक रहा है। 1947 में संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत ने इज़राइल के गठन का विरोध किया था। 1988 में भारत ने स्वतंत्र फिलिस्तीन राष्ट्र को मान्यता दी थी। इसमें गाजा पट्टी एवं वेस्ट बैंक के क्षेत्र आते हैं। 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा इज़राइल की यात्रा के बाद, भारत और इज़राइल में व्यापारिक संबंध स्थापित हुए है। वर्तमान में भारत इज़राइल के साथ अपने संबंधों को मज़बूत करने के साथ-साथ, फिलिस्तीन मुद्दे पर अपने समर्थन की पुष्टि करता है।

समाधान

अरब देशों में स्थित आतंकवादी संगठनों से इज़राइल को खतरा है, परन्तु इज़राइल ने भी दमनकारी नीतियाँ चलाई हैं। इसका अंत होना आवश्यक है। युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। इज़राइल और फिलिस्तीन को दो राष्ट्र के सिद्धांत पर काम करना चाहिए, तभी इस क्षेत्र में शांति संभव है।

सौरभ कुमार राजा

तेरे नाम से है वज़ूद मेरा

तेरे नाम से है वज़ूद मेरा
मेरी साँसो पे तेरा कर्ज़ है,
तेरी शान पे न आये आँच कोई
ऐ वतन ये मेरा फ़र्ज़ है।
तेरे आँचल पे सितारे
क़ामयाबी की हम जोड़ेंगे,
खेल हो या जंग-ए-मैदान
जीते बग़ैर नहीं छोड़ेंगे।
दिखाएंगे दुनियाँ वालों को
मेरा भारत कैसा है,
प्रेम, साहस, हुनर का मेल
कोई न तेरे जैसा है।
बाँहें फैलाए किया है स्वागत
पहले कभी न वार किया,
पर जो कोई टकराए हमसे
उसका जीना दुश्वार किया।
तेरे मान की रक्षा करने
तैयार तेरे हम बच्चे हैं
सफलता क्यों न कदम चूमे
जब इरादे हमारे सच्चे हैं।
धर्म कोई हो जाति कोई
तुझपे जाँ निसार किया,
तेरी मिट्टी को दिल से लगाया
तुझसे इतना प्यार किया।
फ़ख्र से सर ऊँचा हुआ
जब भी तेरा ज़िक्र हो,
माँ है तू हमारी बता
कैसे न तेरी फ़िक्र हो।
देश मेरे तू जान से प्यारा
तुझ पे ये दिल कुर्बान,
होता आया आगे भी होगा
विश्व में तेरा जय-जयगान।
लहराएंगे तिरंगा हर मैदान में
गूँज उठेगा तेरा नाम,
सफल मेरा भारत बनेगा
विश्व विजयी देश महान।

छोटा सा सफ़र

मिली हैं, ये जो साँसें तुझे
तेरी नहीं किसी और की है,
जी रहा है जो ये पल सारे
तेरे नहीं किसी और के हैं,
जो तेरा नहीं उसपर गुमान क्यों
दिया जिसने वो छीन भी लेगा कल।
छोटा सा ही तो ये सफ़र है
जाने ख़त्म हो जाए किस पल।

ना तेरे बस में था आना
ना तेरे बस में है जाना,
मिले हैं जो ये चार दिन
उसे ऐसे ही क्यों खोना,
कैसे हैं ये शिक़वे, क्यों है गिले
अब भी वक़्त है ज़रा सँभल।
छोटा सा ही तो ये सफ़र है
जाने ख़त्म हो जाए किस पल।

मिटा दे सारे गुरूर अपने
दिल को खिल जाने दे,
मैं मेरा, से निकलके ज़रा
हम सब में मिल जाने दे,
दूरियाँ दिलों में न रहें कहीं
बढ़ा हाथ और साथ चल।
छोटा सा ही तो ये सफ़र है
जाने ख़त्म हो जाए किस पल।

ऐ दिल तू यूँ न सता।

बेक़रार है आजकल तू बड़ा
पर इसमें आँखों की क्या ख़ता,
कसूर कुछ तेरा भी तो है
क्यों रुलाता है रात दिन उसे।
ऐ दिल, तू यूँ न सता।

माना कि थोड़ी ज़िद्दी है वो
जो नज़रें बिछाए है इंतज़ार में,
कि, एक नज़र दीदार हो उनका
इसमें उसका क्या कसूर बता।
ऐ दिल, तू यूँ न सता।

ये तो सोच कम से कम
कि उसके वज़ह से तू धड़का था
मिला के एक नज़र उस नज़र से
तुझे दिया तेरे होने का पता।
ऐ दिल, तू यूँ न सता।

क़रार भी तो देते हैं तुझे
पलकों पे सजा के हसीन सपने
ऐसी भी क्या नाराज़गी तेरी
थोड़ा सा तो प्यार जता।
ऐ दिल तू यूँ न सता।

शुभ्रा सिन्हा
मैनेजर (आई. टी.)
बैंक ऑफ बड़ौदा

मेरी हिंदी को मान सम्मान दे दो

सुना है,आज फिर तुमने देश की गरिमा को ठेस पहुँचाई।
विदेशी भाषा को निज भाषा से अधिक प्रतिष्ठा दिलवाई।।

जब हिंदी में ही प्रवाहित होती सोच विचारों की झड़ी।
फिर लिखते बोलते पढ़ते हुए लज्जित क्यूँ होते हर घड़ी।।

मुझे तो कब से आभासित थी तुम्हारी यह विचित्र प्रवृत्ति।
प्रादेशिकता की आड़ में तिरस्कृत करते जब इसकी हस्ती।।

प्रसन्नचित्त हो, यदि अपनाई है तुमने वैदेशिक भाषा।
फिर अवधारणा क्यों बदली, जब समक्ष आई मातृभाषा।।

माना, पहले सदियों तक हम रह चुके हैं पराधीन।
किंतु अब तो हैं स्वछंद, उन्मुक्त, स्व-निर्णय के अधीन।
आज जब विश्व-भर में हिंदी का हो रहा है सम्मान।
तब भी तुम इसकी महत्ता से क्यों बन रहे अनजान।।

अपने का परित्याग कर पराए को माध्यम बनाते हो।
अपनी लेखनी व्यर्थ ही क्यों कलंकित करते जाते हो।।

स्वकीय भाषा से ही अमूल्य धरोहर होती है संरक्षित।
आधुनिक शब्दकोश में भी तो अब यह है सम्मिलित।।

हिंदी अपनी ही है अब तो स्वीकार करो,मान लो।
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी प्रतिष्ठा का मान रखो।।

राजभाषा को ससम्मान उसका आधिकारिक स्थान दे दो।
संवैधानिक अनिवार्यता से नहीं, हृदय से स्वत: स्वीकार करो।।

वो तुमको सुबह का भूला समझकर क्षमा कर देगी।
और इस आत्मग्लानि दोष से अपराध मुक्त कर देगी।।

अब तो, इंडिया भी बदलकर हो गया है भारत।
हिंदीमय बन सिद्ध करो तुम हो एक सच्चे देशभक्त।।

देखो, जागो, इस नव युग में स्वयं को पहचानो।
और मेरी हिंदी को उसका यथोचित मान सम्मान दे दो।।

मेरी हिंदी को उचित मान सम्मान दे दो।

स्मिता जैन
सहायक महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

हम सब का अभिमान है हिंदी

मात्र एक भाषा ही नहीं है, भारत की पहचान है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित, हम सब का अभिमान है हिंदी।।

माँ जिसकी संस्कृत भाषा है, भारत की भाषाएँ बहनें।
कन्नड़, मलयालम, तेलुगू, तमिल से, इसकी प्रीत के क्या कहने।
लिपि सुंदर जिसकी देवनागरी, आर्यावर्त की शान है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित, हम सबका अभिमान है हिंदी।

कबीर की साखी, मीरा के पद, सूर के सुर तुलसी की चौपाई।
गा गा कर बरसों से अब तक, हम सबकी पीढ़ियाँ इतराईं।।

प्रेमचंद, निराला, महादेवी और जयशंकर, रसखान है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित, हम सब का अभिमान है हिंदी।।

युगों-युगों की दीर्घ यात्रा में, आए अनेक शासक आक्रांता।
कुछ ने हिंदी को अपनाया, कुछ ने पढ़ी रामायण, गीता।।
रहे अग्रसर सदा ये भाषा, उन्नति का अवदान है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित,हम सबका अभिमान है हिंदी।

राजभाषा का अतुलित गौरव, हिंदी को ही मिला हुआ है।
सम्मान, सहअस्तित्व का मिश्रण, इस भाषा में घुला हुआ है।
ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति की पोषक, प्रगति की नई बयार है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित, हम सब का अभिमान है हिंदी।

शब्दकोश इसका समृद्ध है, वैज्ञानिक है हिंदी भाषा।
विश्व स्तर पर फले फूले, हम सबको हरदम यह आशा।।
बोली भाषा के मेले में, एक अलग पहचान है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित, हम सब का अभिमान है हिंदी।

एक कसक, यह चढ़े डेहरी, अपने भारतवर्ष के हर घर।
हरेक कंठ पर शोभित हो और सब बोलें प्रिय हिंदी निरंतर।।
न्यायालय, थाना, कार्यालय, दक्षिण की भी शान हो हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में शोभित, हम सब का अभिमान है हिंदी।

मात्र एक भाषा नहीं है, भारत की पहचान है हिंदी।
कोटि-कोटि कंठो में सुशोभित, हम सब का अभिमान है हिंदी।

यशवंत कुमार साहू
सहायक महाप्रबंधक (आवास एवं राजस्व)
भिलाई इस्पात संयंत्र

कविता की अपार संभावनाएँ

कविता है शब्दों का संगम,
भावनाओं का बवंडर,
जीवन की सच्चाई का आभास,
या फिर एक सपनों का संसार।

कविता है एक कला,
एक अभिव्यक्ति,
एक संदेश,
या फिर एक क्रांति।

कविता की हैं अपार संभावनाएँ,
है यह कभी हँसाती तो कभी रुलाती है,
सोचने पर मजबूर कर सकती है,
या फिर हमें एक नई दिशा दे सकती है।
कविता है एक अद्‌भुत कला,
जिसमें है अनंत संभावनाएँ।
यह मनुष्य के भावों को अभिव्यक्त करती है,
और उसे एक नए आयाम में ले जाती है।

कविता है एक शक्तिशाली माध्यम,
जिससे हम दुनिया को एक नए नज़रिए से देख सकते हैं।
यह हमें प्रेरित करती है,
और हमें अच्छाई के लिए प्रेरित करती है।

कविता है एक अनमोल उपहार,
जिसे देती प्रकृति हमें होकर उदार,
यह हमें जीवन की सुंदरता को देखने में मदद करती है,
और हमें देती है खुशियाँ अपार।

कविता की हैं अपार संभावनाएँ ,
और यह हमें एक बेहतर इंसान बनने में मदद करती है।
यह हमें एक नया दृष्टिकोण देती है,
और दुनिया को एक नए तरीके से समझने में मदद करती है।

कविता में आप प्रेम का बखान कर सकते हैं,
या फिर दुख और पीड़ा का भी ।
आप प्रकृति की सुंदरता को बयां कर सकते हैं,
या फिर समाज की विसंगतियों को उजागर कर सकते हैं।

कविता आपके दिल की बात कह सकती है,
आपके विचारों को व्यक्त कर सकती है।
यह आपको एक नया दृष्टिकोण दे सकती है,
और दुनिया को एक नए नज़रिए से देखने पर मजबूर कर सकती है।

कविता की हैं अपार संभावनाएँ ,
इसे कोई भी सीमा नहीं बाँध सकती है।
यह एक ऐसी शक्ति है,
जो दुनिया को बदल सकती है।

थकान

कोई चालीस बरस में ही कहता, थक गया हूँ मैं,
कोई अस्सी में भी कहता, बूढ़ा नहीं हुआ हूँ मैं।

समय कोई पैमाना नहीं, क्यों पैमाइश करते हो
जवान तो बूढ़ा ख़यालों से है, बूढ़ा जवान अपने हौसलों से है।

काया की उम्र मापने के क्या मायने,
जब मन विचारे रहा जवान बने ठाने।

आयु कोई सीमा पार करे, तो मन हो क्यों निर्बल,
शरीर को ही क्यों पोषण देते, मन को भी तू पोषित कर।

न कोई वाहन जीवन से कैसे भाग पाओगे,
मन हो मज़बूत, ज़िद कर जीवन सँवार जाओगे ।

जैसी भी मुश्किल हो पथ में, मन में मत लाचारी रख
आगे बढ़ना है जीवन में, हिम्मत से तू यारी रख।

अपने आप में ही सिमटे रहना, यह अच्छी बात नहीं
नश्वर संसार में आया है, थोड़ी तू दुनियादारी रख ।

पुरुषोत्तम साहू
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

प्राचीन भारतीय स्वास्थ्य सूत्र

१. अजीर्णे भोजनं विषम्।

यदि पूर्व में लिया गया आहार पूरी तरह से पचा ना हो, तथापि पुनः भोजन किया जाना विष के सदृश होता है। भूख लगना पूर्व के भोजन के पच चुका होने का संकेत होता है।

निष्कर्ष : कड़ी भूख लगने पर ही भोजन करें।

२. अर्धरोगहरी निद्रा।

पर्याप्त नींद लेने से आधे रोग दूर हो जाते हैं।

निष्कर्ष : सदैव पर्याप्त और पूरी नींद लें।

३ मुद्गदाली गदव्याली।

समस्त प्रकार के अनाजों में मूंग की दाल सर्वश्रेष्ठ है। अन्य अनाजों के कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं, पर मूंग दाल के नहीं होते।

निष्कर्ष : सभी दालों में मूंग की दाल सर्वश्रेष्ठ है।

४. भग्नास्थि-संधानकरो लशुनः।

लहसुन से टूटी हुई हड्डी के जुड़ने में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष : भोजन में लहसुन को नियमित रूप से शामिल करें।

५. अति सर्वत्र वर्जयेत्।

किसी भी पदार्थ का अतिरेक वर्जित है, अच्छे स्वादिष्ट भोजन का भी अधिक मात्रा में सेवन हानिकारक होता है।

निष्कर्ष : भोजन सदैव संतुलित मात्रा में ही करें।

६. नास्ति मूलमनौषधम्।

कोई ऐसी वनस्पति नहीं है जिसका औषधीय महत्व ना हो।

निष्कर्ष : समस्त वनस्पतियों की रक्षा करें।

७. न वैद्यः प्रभुरायुषः।

कोई भी चिकित्सक लंबी आयु नहीं दे सकता है, चिकित्सकों की भी सीमाएँ।

निष्कर्ष : अपने स्वास्थ्य की रक्षा स्वयं करें, चिकित्सकों अथवा दवाओं के भरोसे ना रहें।

८. चिंता व्याधि प्रकाशाय।

निष्कर्ष : चिंता से बचें, सदैव प्रसन्नचित्त रहें।

९. व्यायामश्च शनैः शनैः।

व्यायाम धीमी गति से करना चाहिए।

निष्कर्ष : शारीरिक कार्यों एवं कसरत आदि में हडबड़ी ना करें

१०. अजवत् चर्वणं कुर्यात्।

भोजन को बकरी की भाँति चबाकर ग्रहण करना चाहिए, जल्दबाजी में भोजन नहीं करना चाहिए। लार से पाचन में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष : भोजन हमेशा शांतिपूर्वक अच्छे मन से भलीभाँति चबा-चबाकर करना चाहिए।

११. स्नानं नाम मनःप्रसाधनकरंदुः स्वप्न-विध्वंसनम्।

स्नान करने से नकारात्मकता व निराशा दूर होती है तथा बुरे सपने नहीं आते।

निष्कर्ष : शारीरिक स्वच्छता का हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

१२. न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा।

भोजन करने के तुरंत बाद स्नान नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष : भोजन करने के पूर्व स्नान कर लेना चाहिए, भोजन के पश्चात कदापि स्नान ना करें।

१३. नास्ति मेघसमं तोयम्।

वर्षा जल के समान शुद्ध और कोई जल नहीं होता।

निष्कर्ष : सदैव शुद्ध पेयजल का ही सेवन करें।

१४. अजीर्णे भेषजं वारि।

अजीर्ण के समय पानी औषधि के सामान कार्य करता है।

निष्कर्ष : अपच की स्थिति में जल का सेवन अधिकाधिक करें।

१५. सर्वत्र नूतनं शस्तं, सेवकान्ने पुरातने।

सदैव ताज़ा वस्तुओं का सेवन करना चाहिए, किंतु चावल और सेवक पुराने हों तभी अच्छे होते हैं।

निष्कर्ष : बासी एवं पुराने हो चुके खाद्य पदार्थों का सेवन ना करें।

१६. नित्यं सर्वा रसा भक्ष्याः।

नित्य वही भोजन ग्रहण करें, जिसमें नमकीन, मीठा, कड़वा, खट्टा, कसैला और तीखा अर्थात सभी छः प्रकार के स्वाद हों।

निष्कर्ष : भोजन में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों का समाविष करें।

१७. जठरं पूरायेदर्धम् अन्नैर्, भागं जलेन च। वायोः संचरणार्थाय चतर्थमवशेषयेत्।।

पेट को आधा अन्न से और एक चौथाई जल से भरें तथा शेष एक चौथाई खाली रहने दें।

निष्कर्ष : कभी भी भरपेट भोजन नहीं करना चाहिए। पूरा पेट भरने तक आहार ग्रहण ना करें।

१८. भुक्त्वा शतपथं गच्छेद् यदिच्छेत् चिरजीवितम्।

भोजन करने के पश्चात खाली ना बैठें, कम से कम आधा घंटा पैदल चलें।

निष्कर्ष : भोजन के पश्चात कुछ कदम टहलना चाहिए, इससे पाचन में सहायता मिलती है।

१९. क्षुत्साधुतां जनयति।

भूख से भोजन का स्वाद बढ़ता है।

निष्कर्ष : कड़ी भूख लगने पर भोजन करें, इससे भोजन स्वादिष्ट लगता है।

२०. चिंता जरा नाम मनुष्याणाम्।

चिंता से उम्र तेज़ी से बढ़ती है, अर्थात बुढ़ापा जल्दी आता है।

निष्कर्ष : अनावश्यक चिंता करने से कोई लाभ नहीं, सदैव प्रसन्नचित्त रहें।

२१. शतं विहाय भोक्तव्यं, सहस्रं स्नानमाचरेत्।

जब भोजन का समय हो जाए, तब अपने सारे कार्य की तुलना में भोजन को प्राथमिकता दें।

निष्कर्ष : कार्य की अधिकता कितनी भी हो, भोजन की उपेक्षा ना करें।

२२. सर्वधर्मेषु मध्यमाम्।

सदैव माध्यम मार्ग का वरण करें किसी भी विषय में चरम से बचें।

निष्कर्ष : विषय कोई भी हो अतिरेक उचित नहीं, सामान्य सीमा के भीतर ही रहें।

नगीना यादव
सीनियर ओ.सी.टी.
रेल एवं स्ट्रक्चरल मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

शब्द

शब्द शब्द से होते अविरल, शब्द शब्द से खोते हैं।
शब्द शब्द में छुपी कहानी, शब्दों से ही चलती है।

शब्द एक, रूप अनेक, शब्दों की हेरा-फेरी है।
कोई शब्द घायल करें, कोई अपनत्व की ढेली है।

शब्द बाण से चलें निरंतर, समझ न पाते नैना कुंडल।
कभी निःशब्द भी कह जाते हैं, सूखे नैनों में बहते सागर।

समझ समझ के इस फेरे को, जो न समझे वो अकेली है।
किंतु शब्द, शब्दों से ज़्यादा व्याकुल मन की पहेली है।

कुछ पहेलियाँ हल हो जातीं, कुछ तो समझ से दूर ही हैं।
बिन शब्दों के निःशब्द बाण से, मन की धरा उकेरी है।

कुछ शब्दों में छिपा हुआ है, कुछ तो खोया उन्हीं शब्दों में।
देखे कौन उत्तर देता है, और कैसे कैसे किन शब्दों में।

सिया-राम

जैसे तेज़ हो सूरज की लाली, भर उठे फूल, लताएँ, डाली।
जैसे सुन्दर रोली की लाली, जैसे महके मेहंदी की थाली।

ऐसी शीत ऋतु की लताएँ, जैसे उठ रही हो सिया की डोली।
चुप, व्याकुल, खुशियाँ भी समेटी, सजी धजी बैठी ज्यों मोड़ी।

लेने अपने सिया को चले हो, चुनरिया राम की सिय ने ओढ़ी।
तेज़ चेहरे पे, मौर माथ सज़ा, मानों राम चढ़ रहे हों ड्योढ़ी।

हर तरह सुंदर मनभावन, दृश्य उतर आई हो धरती।
सारे देवी-देवता सभी गण, आशीर्वाद वर्षा फूलों से करती।

गूँज रही है शहनाइयाँ, शंख गूँजे, शहद सी मिश्री बोली।
सभी मगन, मंत्रमुग्ध हो उठे, देख के ऐसी विस्मय जोड़ी।

अपार प्रेम, त्याग और निष्ठा से, आगे बढ़ती थोड़ी-थोड़ी।
कितनी मोहक मेरे प्रभु, सिया राम की सुंदर जोड़ी।

मन मेरा क्या कहता है

कैसे लिख दूँ मन की बातें, मन मेरा क्या कहता है।
अब बोलूँ कि... अब बोलूँ, पर मुझको कौन सुनता है।

एक शाम ऐसी आएगी, मुझको सब सुनते होंगे।
तुमसे अपने मन की बातें, हम बैठ करते होंगे।

इंतज़ार में अब तो पूरी, ज़िन्दगी छोटी लगती है।
कह देती हूँ मन की बातें, फिर जाने क्यों दूरी लगती है।

छू लेती आकाश को, जैसे छुआ है तुमको।
छू लेती समंदर की लहरें, जैसे मन की लहरें।

किस से मांगूँ, किस से पूछूँ, तुम्हारा पता बतलाओ।
जिधर देखती, तुमको पाती, तुम अपनी ही सुनाओ।

नाप ना सकी आज तक जिसे, वो गहराई मुझे बताओ।
मैं तुम हूँ, या तुम मुझ जैसी, कौन क्या है, समझाओ।

नेह बंध रहे, देह रंग उठे, चमक नई दिखलाओ।
छू लूँ तुमको उन्मुक्त गगन सी, सैर वही करवाओ।

जान गई परछाईं हो मेरी, मुझसे ही तुम सदा रहोगी।
छू लूँ तुम्हें बसा लूँ खुद में, तुम मेरा आकाश बन जाओ।

आवारा मन

सिरहाने पर रख कर सोना, अब ख़्वाब पुराना लगता है।
तेरे मेरे जीवन का ये अंदाज़ पुराना लगता है।
मिलते मिलते यूँ खो जाना, अब साथ पुराना लगता है।
तेरी मेरी बातों का वो साल पुराना लगता है।
धुंधली यादों में सिमटा, अब सब बेगाना लगता है।
आना-जाना मिलना-जुलना सब वीराना लगता है।
रखी हैं मुलाक़ातें आज भी, ख़ज़ाने सी किसी गुल्लक में।
पर फोड़ना उसको, अब काम बड़ा आवारा लगता है।
जला दो धीरे-धीरे, राख़ कर दो आरज़ू सारी।
ये उड़ता गुबार ही अब जीने का सहारा लगता है।

डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'
सेल-सीईटी, भिलाई

अखिल भारतीय लोगो स्पर्धा में धनंजय कुमार मेश्राम को तृतीय पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समूचे भारत में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन विगत 14 एवं 15 सितंबर 2023 को श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, बालेवाड़ी, पुणे, महाराष्ट्र में किया गया।

उक्त आयोजन के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर प्रतीक चिह्न (लोगो) डिज़ाइन स्पर्धा आयोजित की गई थी, जिसमें देश भर के प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर श्री अनिल कुमार उप सचिव (कार्यान्वयन) की ओर से जारी कार्यालय ज्ञापन क्रमांक 12016/08/2023-रा.भा.(का-2) दिनांक 26.07.2023 के अनुसार 'लोगो' हेतु गठित चयन समिति द्वारा सर्वसम्मति से सुश्री रेनु कैंथ, अधीक्षक, सी.बी.एस.ई. हेड क्वार्टर, प्रीत विहार, दिल्ली द्वारा निर्मित लोगो (प्रतीक चिह्न) का चयन प्रथम स्थान के लिए किया गया। प्रथम विजेता को रु. 5000 की राशि व प्रमाण पत्र पुरस्कार स्वरूप दिए जाने तथा चयनित लोगो का प्रयोग पुणे, महाराष्ट्र में होने जा रहे सम्मेलन के दौरान किए जाने की सूचना दी गई।

चयन समिति द्वारा द्वितीय स्थान के लिए श्री आर.एस. ओझा, गेल गैस लिमिटेड, देवास तथा तृतीय स्थान के लिए श्री धनंजय कुमार मेश्राम, वरिष्ठ स्टाफ सहायक, राजभाषा विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र, का चयन किया गया। द्वितीय तथा तृतीय विजेता को पुरस्कार स्वरूप रु. 4000 एवं रु. 3000 की राशि व प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा।

इस क्रम में उल्लेखनीय है कि यह लगातार दूसरा वर्ष है, जब श्री धनंजय कुमार मेश्राम द्वारा डिज़ाइन किए गए लोगो को इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित स्पर्धा में पुरस्कार मिला है। विगत वर्ष 2023 में हिंदी दिवस तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत के लिए आयोजित इसी स्पर्धा में श्री धनंजय कुमार मेश्राम द्वारा निर्मित लोगो को का चयन द्वितीय स्थान के लिए किया गया था।

चयन समिति द्वारा दो अन्य प्रतीक चिह्नों (लोगो) का भी चयन किया गया, जिन्हें राजभाषा विभाग की ओर से प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएंगे। इनके नाम इस प्रकार हैं:- श्री अभ्यानंद शर्मा, कार्यालय अपर महानिदेशक (सतर्कता), पूर्व, के.बो.क़.प्र., कोलकाता एवं श्री संदीप एस. भारती, वरिष्ठ अभियंता इन्स्ट्रूमेंटेशन, गेल (इण्डिया) लिमिटेड, औरैय, उत्तरप्रदेश।

दिनांक 22-08-2023 को भिलाई इस्पात संयंत्र के मानव संसाधन विकास केंद्र में संपन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग की 57वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में श्री धनंजय कुमार मेश्राम को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल श्री हरीश सिंह चौहान ने श्री धनंजय कुमार मेश्राम को बधाइयाँ देते हुए कहा कि, अब उन्हें मेन्टर की भूमिका में आकर अन्य साथियों को भी लोगो डिज़ाइन करना सिखाना चाहिए, ताकि इस विधा में और लोग भी आगे आएँ।

निदेशक प्रभारी, भिलाई इस्पात संयंत्र एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री अनिर्बान दास गुप्ता ने श्री मेश्राम की सराहना करते हुए उन्हें बधाइयाँ दीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित कार्यकारी कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) सुश्री निशा सोनी ने श्री मेश्राम की उपलब्धि को अत्यंत गौरवशाली बताते हुए बधाइयाँ दीं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग के समस्त सदस्य संस्थानों ने भी श्री मेश्राम को अखिल भारतीय स्तर की स्पर्धा में पुरस्कार के लिए बधाई दी है।

धनंजय कुमार मेश्राम
वरिष्ठ स्टाक सहायक
राजभाषा विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र

भारत सरकार
भारतीय डाक विभाग

डाक जीवन बीमा

केन्द्र/राज्य सरकार, सार्वजनिक उपकमों सहकारी समितियों मान्यता प्राप्त
शिक्षा संस्थानों एवं बैंकों के कर्मचारियों एवं समस्त डिग्री डिप्लोमा धारकों के लिए

आपकी सुरक्षा एवं समृध्दि हमारा गौरव

POSTAL LIFE INSURANCE

SURING THE FUTURE OF GOVT-EMPLOYEES/ S/NATIONALISED BANKS/ARMED FORCES

Around 5 million policies in Postal Life Insurance and more then 13 million in Rural Postal Life Insurance

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कार्यालय
मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल छत्तीसगढ़ परिमंडल, रायपुर 492001
फोन : 0771-2236388, 2534161, फैक्स : 0771-2236388

संभागीय कार्यालय
रायपुर 0771-2880438, बिलासपुर 07752-250166
रायगढ़ - 07762-232557, दुर्ग - 0788-2261545,
जगदलपुर- 07782-222490

Website : www-indiapost.gov.in toll free : 1800-233-1614

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

G20

अधिक ब्याज दरों के साथ पाएं अधिक खुशियां

बड़ौदा
तिरंगा प्लस
जमा योजना

7.90%* प्रति वर्ष

399 दिनों के लिए

*वरिष्ठ नागरिकों के लिए 0.50%
और नॉन-कॉलेबल सावधि जमाओं के लिए 0.15% सहित.

टोल फ्री नंबर पर कॉल करें (24x7): 1800 5700 | www.bankofbaroda.in | हमें फॉलो करें

सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

सेल SAIL

हमारे उत्पाद

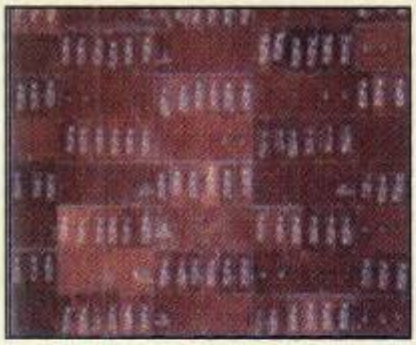

Magnesite Bricks

Magnesia Carbon Tape Hole Sleeve

DRY Ramming Mass

Mag - Chrome Bricks

Silica Bricks

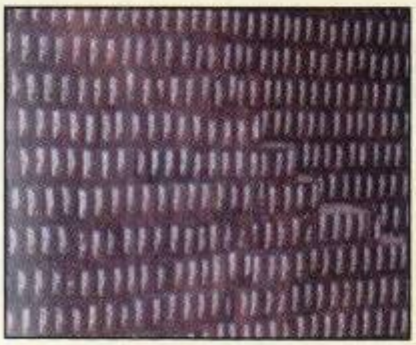

Magnesia Carbon Bricks

L.D. Gunning Mass

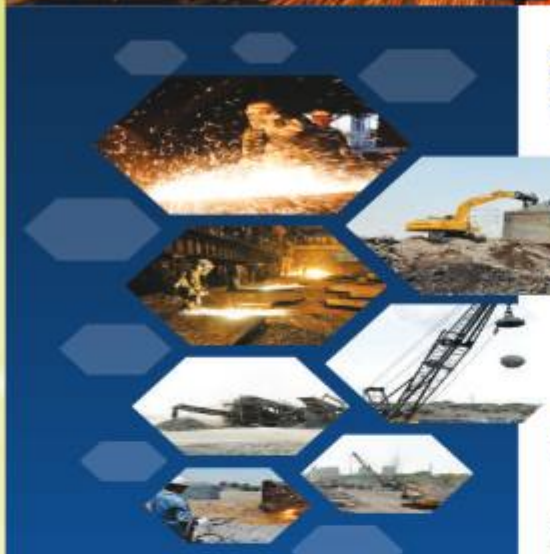

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

AN ISO 9001-2015 COMPANY

एचएससीएल
HSCL

मिनी रत्न -। सीपीएसई

हिंदुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उद्यम) एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड की एक सहायक कंपनी
निर्माण भवन, भिलाई-जिला- दुर्ग (छ.ग.) 490001

हमारी विशेषज्ञता

इस्पात संयंत्रों का निर्माण एवं रखरखाव, औद्योगिक संयंत्रों, भव्य इमारतों, अस्पतालों एवं विश्वविद्यालयों का निर्माण, पूर्वोत्तर इलाकों का निर्माण, राजमार्गों एवं पुलों का निर्माण, देश की हर तरह की अधोसंरचना का निर्माण, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनांतर्गत सड़कों का निर्माण, इत्यादि।

भिलाई इस्पात संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस-01 के कैपिटल रिपेयर का दृश्य

वेब साइट : www.hsclindia.com ई-मेल: hsclbhilai.sectt@gmail.com
निगमित कार्यालय-तीसरी मंजिल, एनबीसीसी स्क्वायर, प्लाट नं.-111 एफ/2, एक्शन एरिया-|||, न्यू टाउन, राजारहाट कोलकाता 700135
पंजीकृत कार्यालय : पी-34/ए, गरियाहाट रोड (दक्षिण) कोलकाता (पं.बंगाल) 700031

NTPCL

A Joint Venture Of NTPC Ltd. & SAIL

भिलाई

AGRICULTURE

Road Construction

Structural Fills

एन.टी.पी.सी.-सेल पावर कंपनी लिमिटेड,(एन.टी.पी.सी.एवं सेल का संयुक्त उपक्रम)

एन.एस.पी.सी.एल.–भिलाई, पोस्ट ऑफिस –भिलाई (पूर्व) - 490021 जिला: दुर्ग (छ.ग.) फोन: 0788 - 2228652, फैक्स: 0788 - 2223410

पावरग्रिड
POWERGRID

G20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पावरिंग हाइट्स

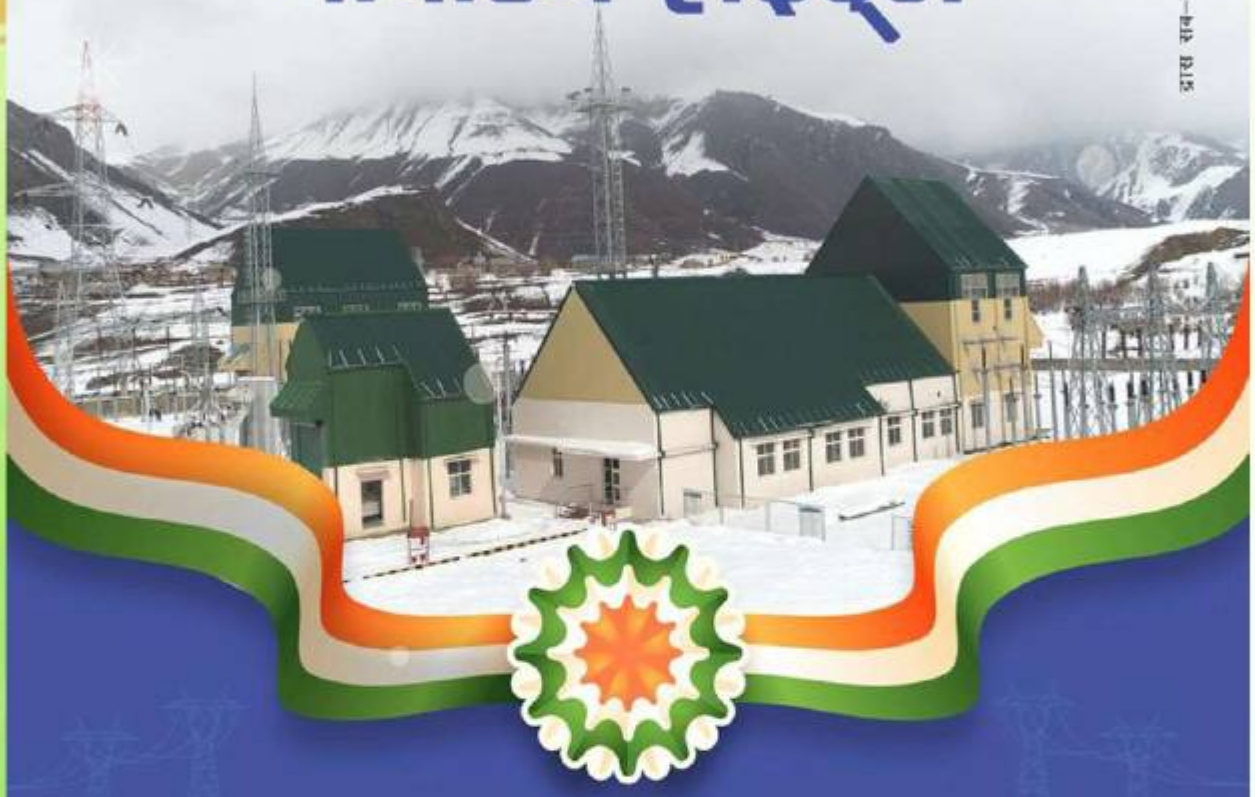

द्रास सब–स्टेशन, लद्दाख

एक राष्ट्र । एक ग्रिड । एक आवृत्ति.

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र की महारत्न उपक्रम (पीएसयू) पावरग्रिड दुनिया की सबसे बड़ी ट्रांसमिशन उपयोगिताओं में से एक है, जो संपूर्ण देश में पावर ट्रांसमिशन परियोजनाओं की कार्य–योजना, डिजाइन, वित्तपोषण, निर्माण, संचालन और रखरखाव में संलग्न है और साथ ही 23 से अधिक देशों में इसके पदचिह्न मौजूद हैं। यह भारतीय दूरसंचार की बुनियादी अवसंरचना क्षेत्र में भी परिचालन करता है।

पारेषण लाइन >1,76,
531 सर्किट कि. मी.

276 उप–केन्द्र

अंतरण क्षमता
5,17,861 मेगावाट

पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

मुख्य व्यवसायिक कार्यालय : सौदामिनी, प्लॉट नंबर 2, सेक्टर 29, गुड़गांव (हरियाणा)–122001, भारत

पंजीकृत कार्यालय : बी–9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–110016

सीआईएन: 1989GOI038121 **www.powergrid.in**

Great Place To Work. Certified